कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

॥ श्रीः ॥

मन्त्रशास्त्रान्तर्गतं

दत्तात्रेयतंत्रम्.

लखीमपुरस्थसंस्कृतपुस्तकालयस्वामि-पंडित-
नारायणप्रसाद-मुकुन्दराम-विर-
चितया भाषाटीकया विभूषितम्.

वह

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने
अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया.

शके १८२२, संवत् १९५७.

कल्याण-मुंबई.

द्वितीयावृत्ति.

प्रस्तावना.

सम्पूर्ण तंत्ररसिक जनोंको विदित हो कि यह दत्तात्रेयतंत्र अत्युत्तम तथा आवश्यकीय प्रयोगोंसे विभूषित है इसकी खोज बहुत दिनोंसे करनेमें अतिपरिश्रम भया जिसका वर्णन नहीं हो सकता, यह ग्रन्थ तो चाहें अनेक पंडितोंके पास होगा, परन्तु जिससे पूछा जाता था, सो पूछतेही यह उत्तर देता था कि हमारे पास नहीं है और यह तंत्रविद्या ऐसीही है कि जिसको छिपानाही पण्डितोंने परम धर्म माना है, अस्तु सहस्रों पण्डितोंसे पूछनेपरभी यह ग्रन्थ जब प्राप्त न भया, तब निरुत्साहचित्त होकर इस ग्रन्थके प्रकाश करनेसे हम वंचित रहे.

यद्यपि अनेक ग्राहकोंके मांगनेपर हम इस पुस्तककी खोजमें सर्वदा रहते रहें और अबतकभी इस तंत्रके खोजमें थे तबतक स्वरोदय विद्याके परमप्रेमी सारस्वतवंशभूषण वैद्यवर्य्य दुर्गाप्रसाद तिनके पुत्र ज्योतिर्वित्पंडित भैरवप्रसादजी तिन्होंने अपने फूफेरे भाई पण्डित श्यामसुन्दरलाल खैरबादनिवासीसे यह दत्तात्रेयतंत्र प्राप्त करके

हमारेको लाकर दिया, यद्यपि यह प्राचीन लिखा ग्रन्थ अत्यंत अशुद्ध था, तथापि हमने अतिप्रसन्नतापूर्वक लेकर यथाबुद्धि इसको शुद्ध करके यथोचित भाषाऽनुवादसे विभूषित कर दिया है, इस अत्युत्तमतंत्रमें २४ पटल हैं तहाँ,

१ प्रथम पटलमें—तंत्रविषय तथा सर्वोंपरिमंत्र है,
२ दूसरे पटलमें—मारणप्रयोग है,
३ तीसरे पटलमें—मोहनप्रयोग है,
४ चौथे पटलमें—स्तंभनप्रयोग है,
५ पाचवें पटलमें—विद्वेषणप्रयोग है,
६ छठे पटलमें—उच्चाटनप्रयोग है,
७ सातवें पटलमें—वशीकरणप्रयोग है,
८ आठवें पटलमें—स्त्रीवशीकरणप्रयोग है,
९ नवें पटलमें—पतिवशीकरण तथा राजवशीकरणप्रयोग है,
१० दशवें पटलमें—आकर्षण प्रयोग वर्णन है,
११ ग्यारहवें पटलमें—इन्द्रजालविद्या है,

१२ बारहवें पटलमें—यक्षिणीसाधन है,
१३ तेरहवें पटलमें—रसायनप्रकार वर्णन है,
१४ चौदहवें पटलमें—कालज्ञानवर्णन है,
१५ पंद्रहवें पटलमें—अनाहारप्रयोगवर्णन है,
१६ सोलहवें पटलमें—आहारप्रयोगवर्णन है,
१७ सत्रहवें पटलमें—निधिदर्शनप्रयोगवर्णन है,
१८ अठारहवें पटलमें—वंध्यापुत्रवतीकरणप्रयोग है,
१९ उन्नीसवें पटलमें—मृतवत्सासुतजीवनप्रकार है,
२० वीसवें पटलमें—काकवन्ध्याचिकित्सावर्णन है,
२१ इक्कीसवें पटलमें—जयोपायवर्णन है,
२२ बाईसवें पटलमें—वाजीकरणप्रयोगवर्णन है,
२३ तेईसवें पटलमें—द्रावणादिप्रयत्नवर्णन है,
२४ चौवीसवें पटलमें—भूतग्रहादिनिवारणप्रकारवर्णन है,

इस प्रकार यह चौवीस पटलोंसे विभूषित अत्युत्तम यह दत्तात्रेय तंत्र तंत्रोंमें शिरोमणि साक्षात् शिवजीकी वाणीसे उत्पन्न पंडितोंका शस्त्रास्त्ररूप ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ-

का सम्पूर्ण हक्क सर्वदाके लिये श्रीयुत सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीके अर्थ हम समर्पण करते हैं, इस ग्रन्थको शुद्ध करने तथा यथाक्रम सब प्रयोगोंकी योजनामें अत्यन्तही परिश्रम भया है, इस कारण उक्त सेठजीके विना अन्य किसीके छापनेका अधिकार नहीं होवेगा, किमधिकम्.

वेदबाणांकचन्द्रेऽब्दे भाद्रे मास्यसिते दले ॥
द्वितीया शनिवारे च भाषारंभः कृतो मया॥१॥

समस्त पण्डितोंका हितैषी–
पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दरामजी
संस्कृतपुस्तकालय–बाँसबरेली
और लखीमपुर (अवध).

॥ श्रीः ॥

अथ भाषार्थसहितं

दत्तात्रेयतंत्रम्.

मंगलाचरणम् ।

प्रणम्य गिरिजाधीशं लोकानां हितकाम्यया ॥
दत्तात्रेयस्य तिलकं प्रकरोम्यार्य्यभाषया ॥ १॥

अर्थ—गिरिजापति (महादेवजी) को प्रणाम करके मनुष्योंके हितकी कामनासे मैं नारायणप्रसाद दत्तात्रेयतंत्र-के तिलकको सुन्दर आर्य्य (श्रेष्ठ) भाषामें करता हूं ॥ १॥

कैलासशिखरासीनं देवदेवं महेश्वरम् ॥
दत्तात्रेयश्च पप्रच्छ शंकरं लोकशंकरम् ॥ १ ॥
कृतांजलिपुटो भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सलम् ॥
भक्तानां च हितार्थाय कल्पतंत्रं प्रकथ्यते ॥२॥

अर्थ–कैलासपर्वतकी चोटीपर विराजमान देवदेव महादेवको दत्तात्रेयजी पूछते भये कैसे हैं महादेव कि जगत्के कल्याणको करनेसे शंकर नामसे विख्यात हैं॥ १॥ तिन भक्तवत्सल श्रीशिवजीसे श्रीदत्तात्रेयजी हाथ जोडकर पूछते भये कि भक्तोंके हितके अर्थ आपने कल्पतंत्र वर्णन किया है ॥ २ ॥

कलौ सिद्धिमहाकल्पं तंत्रविद्याविधानकम् ॥
कथयस्व महादेव देवदेव महेश्वर ॥ ३ ॥
सन्ति नानाविधा लोके यंत्रमंत्राभिचारिके ॥
आगमोक्ताः पुराणोक्ता वेदोक्ता डामरे तथा॥४॥
उड्डीशे मारितंत्रे च कालीचंडेश्वरे मते ॥
राधातंत्रे च उच्छिष्टे धारातंत्रे मृडेश्वरे ॥ ५ ॥
तत्सर्वं कीलकं कृत्वा कलौ वीर्य्यविवर्जिताः ॥
ब्राह्मणः कामक्रोधी च तस्य कारणहेतवे ॥६॥
विना कीलकमंत्राश्च तंत्राश्च कथिताः शिव ॥
तंत्रविद्या क्षणं सिद्धिः कथयस्व मम प्रभो॥७॥

अर्थ—कलियुगमें सिद्धिका देनेवाला महाकल्प तंत्र विद्याका विधान जिसमें ऐसा तंत्र हे देवदेव महादेव ! हे महेश्वर ! आप वर्णन करो ॥ ३ ॥ लोकमें अनेक प्रकारके यंत्र मंत्र अभिचार वर्तमान हैं. वेद, वेदांग, पुराण तथा डामर तंत्रमें ॥ ४ ॥ उड्डीश और मारितंत्रमें कालीतंत्र तथा चंडेश्वरके मतमें, राधातंत्र, उच्छिष्टतंत्र, धारातंत्र, मृडेश्वरतंत्रमें ॥ ५ ॥ जो सम्पूर्ण मंत्र यंत्रादि क्रिया है, तिन सबको कील करके कलियुगमें बलहीन कर दिया, इस कारण कि ब्राह्मणलोग काम क्रोधसे युक्त हैं ॥ ६ ॥ हे शिवजी ! विना कीले भये मंत्र और तंत्र जो कहे हैं, तथा जो तंत्रविद्या क्षणमात्रमें सिद्धि देवे है सो हे प्रभो ! हमारेसे आप वर्णन करो ॥ ७ ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु सिद्धिं महायोगिन् सर्वयोगिविशारद ॥
तंत्रविद्यामहागुह्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ८ ॥
तवाग्रे कथितं देव तंत्रविद्याशिरोमणिः ॥

गुह्याद्गुह्यं महागुह्यं गुह्यं गुह्यं पुनः पुनः ॥ ९ ॥
गुरुभक्ताय दातव्यं नाभक्ताय कदाचन ॥
शिवभक्त्येकमनसे दृढचित्तसमन्विते ॥ १० ॥
शिरो दद्यात्सुतं दद्यान्न दद्यात्तंत्रकल्पकम् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ११

अर्थ—श्रीशिवजी बोले कि हे सम्पूर्ण योगियोंमें विशालबुद्धिवाले महायोगी श्रीदत्तात्रेयजी तुमारे ! आगे हम वह तंत्रविद्या कहेंगे, जो तंत्रविद्या बहुत गुप्त है और देवताओंकोभी दुर्लभ है ॥ ८ ॥ सो हे देव ! तुमारे आगे कहता हूं तंत्रविद्यामें शिरोमणि है और गुप्तसे गुप्त महागुप्त वारंवार गुप्त रखने योग्य है ॥ ९ ॥ यह तंत्रविद्या गुरुभक्तके अर्थ देना अभक्तके अर्थ कदापि देना नहीं, तथा जो शिवजीकी भक्तिमें तत्पर और दृढचित्त हो ॥ १० ॥ अपना शिर दे देवे, पुत्र दे देवे परंतु तंत्रविद्या नहीं देवे और जिसको तिसको अर्थात् प्रत्येक मनुष्यको नहीं देवे यह शिवजीका कहा भया असत्य नहीं जानना ॥ ११ ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथा शृणु ॥
कलौ सिद्धिर्महामंत्रं विना कीलेन कथ्यते॥१२॥
न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः॥
न व्रतं नियमं होमं कालवेलाविवर्जितम् ॥१३॥
केवलं तंत्रमात्रेण ह्यौषधी सिद्धिरूपिणी ॥
यस्य साधनमात्रेण क्षणे सिद्धिश्च जायते॥१४॥

अर्थ—अब आगे हे दत्तात्रेयजी ! जैसे तुमने पूछा तैसेही श्रवण करो कलियुगमें सिद्धिके देनेवाले विना कीले भये महामंत्रोंको कहता हूं ॥ १२ ॥ जिन मंत्रोंके करनेमें न तिथि और न नक्षत्रका नियम है, न वारका नियम है, न व्रतका नियम, न होम तथा समयका नियम नहीं है ॥ १३ ॥ केवल तंत्रमात्रसे औषधी सिद्धिस्वरूपिणी है जिसके साधनमात्रसे क्षणमात्रमें सिद्धि होवे है ॥ १४ ॥

मारणं मोहनं स्तंभं विद्वेषोच्चाटनं वशम् ॥
आकर्षणं चेन्द्रजालं यक्षिणी च रसायनम्॥१५॥
कालज्ञानमनाहारं साहारं निधिदर्शनम् ॥

वन्ध्यापुत्रवतीयोगं मृतवत्सासुतजीवनम्॥१६॥
जयवादे वाजिकरणे भूतग्रहनिवारणम् ॥
सिंहव्याघ्रभयं सर्पवृश्चिकानां तथैव च ॥ १७ ॥
निवारणं भयं तेषां नान्यथा शंकरोदितम् ॥
गोप्यं गोप्यं महागोप्यं गोप्यं गोप्यं पुनः पुनः १८

अर्थ—मारण, मोहन, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल, यक्षिणीसाधन, रसायन ॥ १५ ॥ कालज्ञान, अनाहार, आहार, निधिदर्शन, वंध्यापुत्रवतीकरण, मृतवत्सासुतजीवन, काकवंध्याचिकित्सा ॥ १६ ॥ जयवाद, वाजीकरणसंबंधि द्रावणादिकर्म, भूतग्रहनिवारण, सिंहव्याघ्रसर्पादिभयनिवारण ॥ १७ ॥ ये सम्पूर्ण विषय इस दत्तात्रेय तंत्र विषे हैं जो श्रीशंकरजीके कहे भये ये सब प्रयोग असत्य नहीं हैं और श्रीशिवजीका वारवार यही कथन है कि गुप्त रखने योग्य है, गुप्त रखने योग्य यह तंत्र है ॥ १८ ॥

अथ सर्वोपरि मंत्रः ॥ ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय दर्शय दत्तात्रेयाय नमः तंत्राणि सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयईश्वरसंवादे सर्वोपरि-मंत्रः तथा विषयकथनं नाम प्रथमः पटलः ॥ १॥

अर्थ—ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः इत्यादि यह सर्वोपरि मंत्र है। १०८मंत्र जपे तो सिद्धि होवे ॥

इति प्रथम पटल समाप्त भया ॥ १ ॥

अथ द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

तत्र मारणं । ईश्वर उवाच ॥

अथातः कथयिष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ॥
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ॥ १ ॥
मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ॥
प्राणांतसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥२॥

अर्थ—अब द्वितीय पटलमें मारणप्रयोग है, सो लिखते हैं। श्रीशिवजी बोले हे मुने! अब तुमारे आगे मनुष्योंको शीघ्र सिद्धि करनेवाला मारण प्रयोग कहूंगा, सो सावधान होके श्रवण करो ॥ १ ॥ अपने कल्याणकी इच्छावाला मनुष्य मारणप्रयोगको जिस किसीपर सहसा कदापि नहीं करे, वृथा मारण करना योग्य नहीं फिर जब कोई प्राणां-तसंकट प्राप्त होवे तब करना योग्य है अर्थात् अपने क-ल्याणकी इच्छासे प्राणसंकट होने पर मारण करे ॥ २ ॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ॥
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ॥ ३ ॥
मूर्खेण तु कृते तंत्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ॥
तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत्॥
कर्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत्॥४॥

अर्थ— जब ब्रह्मज्ञानी पुरुष अपने ज्ञाननेत्रोंसे सर्वत्र ब्रह्मात्माही व्याप्त हो रहा है ऐसा दीखता है, तब कोई अत्यंत आवश्यक कार्यार्थ किया जाय तो ठीक है,

अन्यथा अर्थात् जो ऐसा नहीं जानता, उसको महान् दोष प्राप्त होवे है ॥ ३ ॥ मूर्ख मनुष्यने जो अपनी अज्ञानतासे मारणप्रयोग किया तौ अपनेही ऊपर पडता है, इस कारण अपने शरीरकी रक्षा चाहे तो मारणप्रयोग कभी नहीं करे जो कदाचित् मारण करनाही होवे तो इस प्रकारसे करना ॥ ४ ॥

चिताभस्मसमायुक्तं धत्तूरं चूर्णसंयुतम् ॥
यस्यांगे निक्षिपेद्भौमे सद्यो याति यमालयम्॥५॥

अर्थ—चिताकी भस्म धतूरेका चूर्ण मिलाय भौमवारको जिसके अंगपर डाले सो शीघ्र यमपुरको जावे ॥ ५ ॥

भल्लातकोद्भवं तैलं कृष्णसर्पस्य दन्तकम् ॥
विषं धत्तूरसंयुक्तं यस्यांगे निक्षिपेन्मृतिः ॥ ६ ॥

अर्थ—भिलावेका तेल काले सांपके दांत विष और धतूरेका चूर्ण मिलाय जिसके अंगपर छोडे सो मृत्युको प्राप्त होवे ॥ ६ ॥

नारास्थिचूर्णताम्बूलं भुंक्ते मृत्युकरं ध्रुवम्॥

सर्पास्थिचूर्णं यस्यांगे निक्षिपेन्मृत्युमाप्नुयात्॥७

अर्थ—मनुष्यके हाडका चूर्ण, तांबूल (पान) में रखकर खानेसे निश्चय मृत्यु करे सांपके हाडका चूर्ण जिसके अंगपर डाले सो मृत्युको प्राप्त होवे ॥ ७ ॥

चिताकाष्ठं गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते ॥
निखनेच्च गृहद्वारे मासे मृत्युर्भविष्यति ॥ ८ ॥

अर्थ—चितामेंसे लकडीको मंगलवार भरणी नक्षत्रमें लावे जिसके द्वारपर गाड देवे सो एक महीनेमें मृत्युको प्राप्त हो जावेगा ॥ ८ ॥

कृष्णसर्पवसा ग्राह्या तद्वर्तिं ज्वालयेन्निशि ॥
धत्तूरबीजतैलेन कज्जलं नृकपालके ॥ ९ ॥
चिताभस्मसमायुक्तं लवणं पंचसंयुतम् ॥
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम्॥१०

अर्थ—काले सांपकी चर्बी लेवे तिसकी बत्ती बनाय धत्तूरेके बीजके तेलमें रात्रिसमय जलावे, फिर मनुष्यके कपालमें काजल पारे ॥ ९ ॥ और चिताकी भस्मसहित

पांचों लवण मिलाय जिसके अंगपर वह चूर्ण डाले सो शीघ्र यमपुरको जावे ॥ १० ॥

गृहीत्वा वृश्चिकं मांसं उल्लूकं चूर्णसंयुतम् ॥
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं नरो मृत्युर्भविष्यति॥११॥

अर्थ—वीछीका और उल्लूके मांसका चूर्ण बनावे यह चूर्ण जिसके अंगपर डाले सो मनुष्य मृत्युको प्राप्त होवेगा ॥ ११ ॥

लिखेत्पंचदशीयंत्रं चिताभस्मविलोमतः ॥
श्मशानाग्नौ क्षिपेद्यंत्रं भौमे च म्रियते रिपुः १२

अर्थ—चिताकी भस्मसे पंद्रहवां यंत्र विलोम रीतिसे लिखे और भौमवारको चिताके अंगारमें यंत्रको छोड देवे तो शत्रु मर जावे ॥ १२ ॥

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्वितम् ॥
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् १३

अर्थ—उल्लूकी विष्ठा लेकर विषका चूर्ण मिलाय जिसके अंगपर छोडे शीघ्र सो यमपुरको जावे ॥ १३ ॥

रिपुविष्ठा गृहित्वा च नृकपाले तु धारयेत्॥
उद्याने निखनेद्भूमौ यस्य नाम लिखेत्स हि॥१४॥
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम्१५

अर्थ—शत्रुकी विष्ठा लेकर मनुष्यके कपालमें धरे, फिर उसको वनमें पृथिवीमें गाड देवे जिसका नाम लिखे॥ १४॥ सो जबतक विष्ठा सूखे तबतक शत्रु मृत्युको प्राप्त हो जावे. हर एकको यह नहीं देवे ऐसा यह शंकरजीका कहा भया वाक्य अन्यथा नहीं ॥ १५ ॥

कृकलाया वसातैलं यस्यांगे बिन्दुमात्रतः ॥
निक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि रक्षति शंकरः॥ १६ ॥
गृहदीपे तु निक्षिप्ते लवणं विजयायुतम् ॥
यस्य नाम्ना मृतं सत्यं मासमेकं न संशयः १७॥

अथ मंत्रः॥ ॐनमः कालरूपाय अमुकं भस्मीकुरु कुरु स्वाहा

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयईश्वरसंवादे

मारणप्रयोगो नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

अर्थ–गिर्गिटकी चर्बीका तेल जिसके अंगमें एक बिंदुमात्र डाले तो जो शिवजीभी रक्षा करें तौभी शत्रुकी मृत्यु होवे ॥ १६ ॥ घरके दीपकमें लवण और भांग मिलाय रक्खे फिर उससे जिसका नाम लिखे वह निःसन्देह एक मासमें मृत्युको प्राप्त होवे ॥ १७ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ नमः कालरूपाय० इत्यादि मंत्र अमुकके स्थानमें शत्रुका नाम ग्रहण करना ॥ यह दूसरा पटल समाप्त भया ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

तत्र मोहनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ॥
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु योगींद्र यत्नतः ॥ १ ॥

अर्थ–श्रीशिवजी दत्तात्रेयजीसे वर्णन करते हैं कि अब इसके आगे मनुष्योंको शीघ्र सिद्धि करनेवाला मोहनप्रयोग वर्णन करता हूं सो हे योगीन्द्र ! सावधान होके श्रवण करो ॥ १ ॥

तुलसीबीजचूर्णं तु सहदेव्या रसेन च ॥
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत्॥ २ ॥

अर्थ—तुलसीके बीजका चूर्ण सहदेवीके रसमें रवि-वारके दिन जो मनुष्य तिलक करे तो सम्पूर्ण देखनेवाले मोहित हो जावें ॥ २ ॥

हरितालं चाश्वगन्धां पेषयेत्कदलीरसैः ॥
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥३॥
शृंगीचन्दनसंयुक्तं वचाकुष्ठसमन्वितम् ॥
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे चैव विशेषतः॥ ४ ॥
राजाप्रजापशुपक्षिदर्शनान्मोहकारकम् ॥
गृहीत्वा मूलताम्बूलं तिलकं लोकमोहनम्॥५॥

अर्थ—हरताल, असगंध, गोरोचन इनको रविवारके दिनके लेके रसमें पीसकर तिलक करे तो सब मोहित होवें ॥ ३ ॥ काकरासिंगीमें चंदन मिलाय वच और कूठ सं-युक्त करे, इनकी धूप अपनी देह तथा वस्त्र व मुखपर देवे ॥ ४ ॥ तो देखनेसे राजा प्रजा पशु पक्षी मोहित हो

जावें, तथा पानकी जडको पीसकर तिलक करे तो सब लोक मोहित होवें ॥ ५ ॥

सिंदूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ॥
धात्रीरसेन संपिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ६ ॥
मनःशिलां च कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसैः ॥
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ॥७॥

अर्थ–सिंदूर, केशर, गोरोचन ये आंवलेके रसमें पीसकर तिलक करे तो लोक मोहित होवें ॥ ६ ॥ मैन-शिल, कपूर इनको केलेके रससे पीसकर तिलक करे तौ मनुष्योंको मोहित करे श्रीशिवजी कहते हैं यह हमारा कहा भया वचन सत्य है ॥ ७ ॥

सिंदूरं च वचाश्वेततांबूलरसपेषयेत् ॥
अनेनैव तु मंत्रेण तिलकं लोकमोहनम् ॥ ८ ॥
भृंगराजमपामार्गं लाजा च सहदेविका ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः॥९॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत् ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः॥१०

अर्थ–सिंदूर, सफेद वच इनको पानके रसमें पीसे इसका तिलक मंत्रसे करे तो सब लोक मोहित होवें॥८॥ भांगरा, ओंगा, लज्जावंती, सहदेई इनका तिलक करे तो देखनेसे मनुष्य मोहित होवें ॥ ९ ॥ सफेद दूबको लेके हरतालमें घोटकर इसका तिलक करे तो त्रैलोक्यको मनुष्य मोहित करे ॥ १० ॥

गृहीत्वोदुंबरं पुष्पं वर्तिं कृत्वा विचक्षणैः ॥
नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं कारयेन्निशि ॥ ११॥
कज्जलं चांजयेन्नेत्रे मोहनं सर्वतो जगत् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम्॥१२॥

अर्थ–बुद्धिमान् गूलरके फूलको लेकर उसकी वर्त्ती बनाय गायके माखनसे दीपक प्रज्वलित कर रात्रिसमय काजल पारे ॥ ११ यह ॥ कज्जल नेत्रोंमें आंजे तो सब जग-

तू मोहे यह देवताओंकोभी दुर्लभ है किसीको नहीं देवे ॥ १२॥

श्वेतगुंजारसे पेष्यं ब्रह्मदंडीयमूलकम् ॥
लेपमात्रे शरीराणां मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १३॥
बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु च्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥
कपिलापयसा युक्तं वटीं कृत्वा तु गोलकम्॥१४॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् ॥
क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ १५ ॥

अर्थ—सपेद घूंघचीके रसमें ब्रह्मदंडीकी जडको पीसकर शरीरपर लेप मात्र करनेसे सब जगत देखनेसे मोहित हो जावे ॥ १३ ॥ बिल्वपत्रको लेकर छायामें सुखाय कपिला गौके दूधमें पीस गोली बनावे ॥ १४ ॥ इसका तिलक लगानेसे जो देखे सो सब प्रकारसे मोहित हो जावे क्षणमात्रमें प्राण और धनसे मोहित होवे ॥ १५ ॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचंदनसंयुतम् ॥
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १६ ॥

विजयापत्रमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ॥
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १७ ॥

अर्थ—सपेद आककी जडको लेकर सपेद चंदन मिलाय इसका लेप देहमें करे तौ सब जगत मोहित होवे ॥ १६ ॥ भांगकी पत्तीको लेकर सपेद सरसों मिलाय देहपर लेपे तौ सब लोक मोहित होवे ॥ १७ ॥

गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥
अश्वगंधासमायुक्तं विजयाबीजसंयुतम् ॥ १८ ॥
कपिलादुग्धसार्धेन वटी टंकप्रमाणतः ॥
भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहनं सर्वतो जगत्॥१९॥

अर्थ—तुलसीके पत्तोंको लेके छायामें सुखावे फिर असगंध, भांगके बीज मिलाय ॥ १८ ॥ कपिला गौके दूधके साथ टंक प्रमाण (४ मासे) की गोलियां बनावे. प्रातःकाल उठकर एक गोली खावे तो सब जगत् मोहित हो जावे ॥ १९ ॥

कटुतुंबीबीजतैलं ज्वालयेत्पटवर्तिकाम् ॥
कज्जलं चांजयेन्नेत्रे मोहनं सर्वतो जगत्॥ २० ॥
पंचांगदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेतगुंजासमन्वितम् ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् २१
इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयईश्वरसंवादे मोहन-
प्रयोगकथनं नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

अर्थ—कड़ुई तोंबीके बीजोंका तेल निकाल कपडेकी बत्ती बनाय दीपकमें प्रज्वलित कर काजल उतार नेत्रोंमें अंजन करे तो सब जगत् मोहित हो जावे ॥ २० ॥ अनारके पंचांगको पीसकर सपेद घूंघची मिलाय तिलक करे तौ सब जगत् मोहित हो जावे ॥ २१ ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें तीसरा मोहनपटल समाप्त भया ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थः पटलः ॥४॥

तत्र स्तंभनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तंभनाभिधम् ॥

यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ॥ १ ॥
अर्थ–श्रीशिवजी बोले अब आगे स्तंभनप्रयोग कहता हूं जिसके साधनमात्रसे सिद्धि हाथमें होती है ॥ १ ॥

तत्रादौ संप्रवक्ष्यामि अग्निस्तंभनमुत्तमम् ॥
वसां गृहीत्वा मांडूकीं कौमारीरसपेषयेत् ॥ २ ॥
मंडूकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता ॥
लेपमात्रे शरीराणामग्निस्तंभः प्रजायते ॥ ३ ॥

अर्थ–तहां प्रथम अग्निस्तंभन कहूंगा मेंडककी वसाको ग्रहण करके घीग्वारके रसमें मिलावे ॥ २ ॥ अथवा मेंडककी चर्बीको लेके कपूर मिलाय शरीरपर लेप करनेसे अग्निसे अंग नहीं जले ॥ ३ ॥

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यंगमाचरेत् ॥
अग्निना न दहेदंगमग्निस्तंभः प्रजायते ॥ ४ ॥
कदलीरसमादाय कुमारीरसपेषयेत् ॥
अर्कदुग्धं तथा युक्तमग्निस्तंभः प्रजायते ॥५॥

अर्थ–घीग्वारके रसमें तेलको मिलाय शरीरपर मले

तौ अग्निसे अंग नहीं जलेगा ॥ ४ ॥ केलेके रसमें घीग्वारका रस और आकका दूध मिलाय लेपन करनेसे अग्निस्तंभन होवे ॥ ५ ॥

कुमारीरसलेपेन किंचिद्वस्तु न दह्यते ॥
अग्निस्तंभनयोगोयं नान्यथा मम भाषितम् ॥६

अर्थ–घीग्वारके रससे लेपन करी भई कोईभी वस्तु हो दग्ध नहीं होती यह अग्निस्तंभन योग हमारा कहा भया सत्य है ॥ ६ ॥

पिप्पलीमरिचीशुंठीश्चर्वयित्वा ततः पुनः ॥
दिप्तांगारं नरो भक्षेन्न शक्तं दह्यते क्वचित् ॥७॥
कौमारीचूर्णसंयुक्तं लिप्तदेहो न दह्यते॥
आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वयंस्तगरं तथा ॥८॥
तप्तलोहं लिहेत्पश्चात् वक्रं न दह्यते क्वचित् ॥
अग्निस्तंभनयोगोयं नान्यथा शंकरोदितम्॥९॥
अथ मंत्रः ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॥ ॥

अर्थ—पीपल, मिरच, सोंठ चावकर जलता अंगार मनुष्य मुखमें रख लेवे तो मुख कुछभी नहीं जले ॥ ७ ॥ तथा इनका चूर्ण घीग्वारके रसमें मिलाय लेप करे तो नहीं जले, और घी शक्कर पीकर तगर चाव लेवे ॥ ८ ॥ अनन्तर जलते हुए लोहको लील लेवे तो मुख नहीं जले यह अग्निस्तंभनयोग शिवजीने सत्य कहा है ॥ ९ ॥ ॐ नमो अग्निरूपाय० ॥ इत्यादि मंत्र है ॥

अथ स्थानस्तंभनम् ॥

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वा श्वेतगुंजां च निर्वपेत् ॥
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्याद्गुंजालता शुभा॥१०
यस्यांगे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तंभः प्रजायते ॥
यस्य नाम्ना च लवणैः श्मशानाग्नौ हुनेत्तथा ११
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो दिगंबराय अमुकस्यासनं स्तंभय स्तंभय फट् स्वाहा ॥
अस्य मंत्रस्य लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥ १२ ॥

अर्थ—मनुष्यके कपालमें मिट्टी भरकर सफेद घूंघचीके बीज बोना, और गौके दूधसे सींचना, उससे सुन्दरवेल उत्पन्न करे ॥ १० ॥ उस वेलके पत्ते वा वेलको जिसके जिसके देहपर डाल देवे तौ आसनस्तंभन हो जाय, तथा जिसके नाम पर श्मशानकी अग्निमें मंत्र पढकर लवणसहित हवन करे तौ आसन और स्थानका स्तंभन हो जाय ॥ ११ ॥ मंत्र जो मूलमें लिखा है सो एक लक्ष जपनेसे सिद्ध होता है ॥ १२ ॥

अथ बुद्धिस्तंभनम् ।

उलूकस्य कपेर्वापि तांबूले यस्य दापयेत् ॥
विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते॥१३
भृंगराजमपामार्गं सिद्धार्थसहदेविका ॥
कोलं वचा च श्वेतार्कं सत्त्वमेषां समाहरेत् १४॥
लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत्सुधीः ॥
ललाटे तिलकं कुर्याद्दुष्टबुद्धिः प्रणश्यति॥१५॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो भगवते अमुकस्य

बुद्धिस्तंभनं कुरु कुरु फट् स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ॥ १६ ॥

अर्थ—अब बुद्धिस्तंभन लिखते हैं— उल्लुपक्षी तथा वानरकी विष्ठाको पानमें रखकर जिसको यत्नसे खिलावे उसकी बुद्धि स्तंभन होवे ॥ १३ ॥ भंगरा, ओंगा, सरसों, सहदेई, कंकोल, वच, सपेद आक, इनका सत खींचकर लेवे ॥ १४ ॥ और उसको लोहेके पात्रमें डालकर तीन दिन तक मंत्र पढ पढ मर्दन करे चौथे दिवस जिस शत्रुके नामसे मस्तकपर तिलक लगावे और शत्रुके आगे जाय तो शत्रुकी बुद्धिनाश हो जावे ॥ १५ ॥ मंत्रमें अमुककी जगह शत्रुका नाम लेवे ॥ एक लक्षमंत्र जपनेसे सिद्धि होवे ॥१६॥

अथ शस्त्रस्तंभनम् ।

पुष्यार्कें तु समुद्धृत्य विष्णुक्रांतासुमूलकम् ॥
वक्त्रे शिरसि धार्यं तच्छस्त्रस्तंभः प्रजायते १७
पुष्याऽर्केहि समादाय अपामार्गस्य मूलकम् ॥

घृष्ट्वा लिंपेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तम्भः प्रजायते १८

अर्थ—अब शस्त्रस्तंभन लिखते हैं रविवारको पुष्य नक्षत्रमें विष्णुक्रांताकी जडको लाकर मुखमें वा शिरपर धारण करे तो शस्त्रोंका स्तंभन होवे ॥ १७ ॥ तथा पुष्प-नक्षत्रमें ओंगाकी भड लावे और घिसकर अपने अंगमें लेप करे तो शस्त्रस्तंभन होय अर्थात् शरीरमें हथियार नहीं गडे ॥ १८ ॥

करे सुदर्शनं मूलं बध्वा तालस्य वै मुखे ॥
केतकी मस्तके क्षिप्तं खड्गस्तंभः प्रजायते १९॥
एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृतं पिबेत्॥
आयाताऽनेकशस्त्राणां समूहं स निवारयेत् २०॥

अर्थ—हाथमें सुदर्शनकी जडको बांधे, मुखमें ताडवृ-क्षकी जडको मस्तकपर केतकीकी जड हो तो खड्गका स्तंभन होवे अर्थात् उसके तलवार नहीं गडे॥ १९॥ इनही तीनों अर्थात् सुदर्शन ताड़ केतकी इनकी जड़का चूर्ण घी मिलाय मंत्रपूर्वक पीवे तो चलते हुये अनेक हथिया-

रोंके बीच वह चला जाय सबको निवारण करेगा॥२०॥

खर्जूरी मुखमध्यस्था करे बध्वा च केतकीम् ॥
भुजदंडस्थितं चार्कं सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥२१॥
गृहीत्वा रविवारे च बिल्वपत्रं सुकोमलम् ॥
पिष्ट्वा विषसमं सार्द्धं शस्त्रस्तंभनलेपनम् ॥२२
पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ॥
हस्ते शस्त्रभयं नास्ति संगरे च कदाचन॥२३॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो भगवते महाबलप-
राक्रमाय शत्रूणां शस्त्रस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥
लक्षैकजपात्सिद्धिः ॥

अर्थ–खजूरको मुखमें, केतकीको हाथमें बांधकर, आकको भुजाओं पर बांधे तो सब शस्त्र निवारण होवे ॥ २१ ॥ रविवारको बेलवृक्षके कोमल पत्तोंको लेके विष मिलाय पीस लेवे सो लेप करनेसे शस्त्रस्तंभन होवे ॥ २२ ॥ तथा पुष्यनक्षत्रमें रविवारके दिन सपेद घुंघचीकी जड उखाडकर लावे, मंत्र पढकर हाथमें बांधे तो

संग्राममें हथियारसे कुचभी नहीं भय होवे ॥ २३॥ मूलमें लिखा भया मंत्र एक लक्ष जपे तो सिद्धि होवे ॥

अथ सेनास्तंभनम् ।

चितांगारेण विलिखेन्मंत्रं पात्रे च मृण्मये ॥
रिपुनामयुतं तच्च जलकुंडे विनिक्षिपेत् ॥ २४ ॥
मंत्राभावे गृहीत्वा तु श्वेतगुंजाविधानकम् ॥
निखनेत्तु स्मशाने च पाषाणैस्तत्प्रदापयेत् २५॥

अर्थ–अब सेनास्तंभन लिखते हैं–चिताके कोईलेसे मिट्टीके पात्रमें शत्रुका नाम मंत्रसहित लिखे और जलकुंडमें डूबा देवे ॥ २४ ॥ अथवा मंत्र पढकर सपेद घुंघुचीको विधिपूर्वक लावे और श्मशानमें गाड देवे ऊपरसे पत्थर रख देवे ॥ २५ ॥

अष्टौ च योगिनीः पूज्य ऐंद्रीं माहेश्वरीं तथा ॥
वाराहीं नारसिंहीं च वैष्णवीं च कुमारिकाम् २६॥
लक्ष्मीं ब्राह्मीं च संपूज्य गणेशं बटुकं तथा ॥
क्षेत्रपालं तथा पूज्यं सेनास्तंभो भविष्यति २७॥

पृथक् पृथक् बलिं दद्यात् तस्य नामाभिभागतः
मद्यं मांसं तथा पुष्पं धूपं दीपं बलिक्रिया ॥२८॥
अथ मंत्रः ॥ॐ नमः कालरात्रित्रिशूलधारिणि
मम शत्रुसेनास्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा । लक्षै
कजपात्सिद्धिः ॥ २९ ॥

अर्थ—आठों योगिनीकी पूजा करे १ ऐंद्री, २ माहेश्वरी, ३ वाराही, ४ नारसिंही, ५ वैष्णवी, ६ कौमारी, ७ लक्ष्मी, ८ ब्राह्मी तथा गणेश, भैरव, क्षेत्रपाल इनका पूजन करे तो सेनास्तंभन होवे ॥ २६ ॥ २७ ॥ अलग २ इनको बलि देवे नाम उच्चारण करता जाय मदिरा, मांस, फूल, धूप, दीप आदिसे बलिदान देवे॥ २८॥ एक लक्ष मंत्र जपे तो सिद्धि होवे ॥ २९ ॥

अथ सैन्यपलायनम् ।

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकस्य पक्षयोः ॥
भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं तस्य नामसमन्वितम्॥३०॥
गोरोचने गले बद्धा काकोलूकस्य पक्षयोः॥

सेनानीसन्मुखं गच्छेन्नान्यथा शंकरोदितम्३१॥
शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्तेति निश्चितम् ॥
राजाप्रजागजादींश्च नान्यथा शंकरोदितम्३२॥
अथ मूलमंत्रः॥ॐ नमो भयंकराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यपलायनं कुरु कुरु स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ॥ ३३ ॥

अर्थ—अब सेनाको भगानेका उपाय लिखते हैं— मंगलवारके दिन कौआ और उलूकपक्षीके परोंको लेवे और भोजपत्रपर तिस शत्रुके नामसहित मंत्रको गोरोचनसे लिखे, फिर परों सहित उसको गलेमें बांधकर सेनापतिके सन्मुख जावे तो सेना पलायमान होवे यह शिवजीका कहा सत्य है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तथा उसके सेनामें जाकर शब्दमात्र करनेसे अर्थात् ललकार देनेहींसे सेना भागने लगे यह शंकरजीका कहा सत्य है असत्य नहीं है ॥ ३२ ॥ एक लक्षजपसे सिद्धि प्राप्त होवे ॥ ३३ ॥

अथ मनुष्यस्तंभनम् ।

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद्गोरोचनैर्नरम् ॥
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुंभे नरस्तंभः प्रजायते ॥३४॥

अर्थ—अब मनुष्यस्तंभन लिखते हैं—रजोवती स्त्रीकी योनिके वस्त्र पर गोरोचनसे जिस मनुष्यका चित्र लिखे और उसके नामसे घडामें डाल बंद कर देवे तो मनुष्यका स्तंभन हो जावे ॥ ३४ ॥

अथ गोमहिष्यादिपशुस्तंभनम् ।

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ॥
तदा धेनुमहिष्यादिपशुस्तंभः प्रजायते ॥ ३५ ॥

अर्थ—ऊंटके हाड लेके जिस पशुके स्थानके चारों ओर गाड देवे तो गौ भैंस आदि पशुका स्तंभन हो जावे ॥ ३५ ॥

अथ मेघस्तंभनम् ।

इष्टकासम्पुटं कृत्वा तस्मिन्मेघं समालिखेत् ॥
स्मशानभस्मना स्थाप्यं भूमौ स्तंभः प्रजायते ३६

अर्थ—अब मेघस्तंभन लिखते हैं—दो ईंटोंका सम्पूट

बनाकर उसमें चिताकी भस्मसे मेघ लिखकर मंत्रपूर्वक पृथिवीमें गाड देवे तो मेघस्तंभन होवे अर्थात् वर्षता भया मेघ थम जावे ॥ ३६ ॥

अथ निद्रास्तंभनम् ।

मधुना बृहतीमूलैरंजयेल्लोचनद्वयम् ॥
निद्रास्तम्भो भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ३७

अर्थ—अब निद्रास्तंभन लिखते हैं—कटेरीकी जडको सहतमें घिसकर दोनों नेत्रोंसे अंजन करे तो उसकी नींद थम जावे यह हमारा कहा वचन सत्य है ॥ ३७ ॥

अथ नौकास्तंभनम् ।

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पंचांगुलं खनेत् ॥
नौंकामध्ये तदा नौकास्तंभनं जायते ध्रुवम्॥३८

अर्थ—भरणीनक्षत्रमें गूलरकी पांच अंगुलकी कील बनाय नौका (नाव) की पेंदीमें गाड देवे तो निश्चय नौकास्तम्भन हो जावे ॥ ३८ ॥

अथ गर्भस्तंभनम् ।

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात्कृष्णधत्तूरमूलकम् ॥
कट्यां बध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तंभः प्रजायते॥३९
तंदुलीमूलतोयेन देयं तंदुलवारि च ॥
धत्तूरमूलचूर्णं तु योनिस्थं गर्भधारणम् ॥४०॥
ललना शर्करा पाठा कुंदश्च मधुनान्वितः ॥
भक्षितो वारयत्येव पतन्तं गर्भमंजसा॥४१॥

अर्थ–अब गर्भस्तंभन कहते हैं–पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन काले धूतेरकी जड लाकर काले धागेमें गर्भिणी स्त्रीकी कमरमें बांधे तो गर्भस्तंभन होवे ॥ ३९ ॥ चौलाईकी जडको चांवलोंके जलके साथ देवे तथा धतूरेकी जडका चूर्ण योनिमें पोटली बनाय राखे तो गर्भस्तम्भन होवे॥ ४० ॥ केशर, मिश्री, पाढ, कुन्द यह औषध सहतमें मिलाय खानेसे गिरता हुवा गर्भ रुक जाता है ॥ ४१ ॥

कुलालपाणिसंलग्नः पंकः क्षौद्रसमन्वितः ॥
अजाक्षीरेण संपीतो गर्भस्तम्भं करोत्यलम् ॥४२

अथ मंत्रः॥ ॐ नमो भगवते महारौद्राय सर्वस्तं-
भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ लक्षजपात्सिद्धिः ॥
इति श्रीदत्ता० स्तंभनप्रकारश्चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

अर्थ—कुम्हारके हाथकी मिट्टी सहत मिलाय बकरीके दूधसे पीवे तो गर्भस्तंभन होवे ॥ ४२ ॥ मूलमंत्र एक लक्ष जपे ॥ यह चौथा पटल समाप्त भया ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

तत्र विद्वेषणम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

विद्वेषं नरनारीणां विद्वेषं राजमंत्रिणोः ॥
महाकौतुकविद्वेषं शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ॥ १ ॥
एकहस्ते काकपक्षमुलूपक्षं करेपरे ॥
मंत्रयित्वा मिलत्यग्रे कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् ॥
यंद्गृहे निखनेद्भूमौ विद्वेषं तस्य जायते ॥ २ ॥

अर्थ—अब पंचम पटलमें विद्वेष (वैर) प्रयोग कहते हैं—पुरुष व स्त्रियोंका विद्वेष, राजा तथा मंत्रियोंका विद्वेष आदि महा कौतुकरूप विद्वेषकी सिद्धि यत्नपूर्वक श्रवण

करो ॥ १ ॥ एक हाथमें कौएका पक्ष दूसरे हाथमें उलूकपक्षीका पंख लेके मंत्रसे अभिमंत्रित कर मिलाय देवे फिर काले सूतसे लपेटे जिसके घरमें गाड देवे उसको विद्वेष होवे ॥ २ ॥

गृहीत्वा गजकेशं च गृहीत्वा सिंहकेशकम् ॥
गृहीत्वा मृत्तिकापादं पोटलिं निखनेद्भुवि ॥३ ॥
तस्योपरि स्थापयेऽग्निं मालतीपुष्पहोमयेत् ॥
विद्वेषं कुरुते तस्य नान्यथा शंकरोदितम्॥४॥

अर्थ–हाथीके केश, तथा सिंहके केश (बाल) लेकर शत्रुके पांवके नीचेकी मिट्टी लेके पोटली बनाय पृथ्वीमें गाड देवे ॥ ३ ॥ तिसके ऊपर अग्निस्थापन करे और चमेलीके फूलोंका हवन करे तो वह विद्वेषभावको प्राप्त होवे यह शिवजीका कहा सत्य है ॥ ४ ॥

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ॥
विद्वेष्यपादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत् ॥ ५ ॥
जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ॥

नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य तद्गृहे निखनेद्यदि ॥
विद्वेषं जायते शीघ्रं पितापुत्रावपि ध्रुवम् ॥ ६ ॥

अर्थ–बिल्ली और मूसेकी विष्ठाको लेकर जिन दोनोंमें अथवा जिसका वैर कराना हो उसके पांवतलेकी मिट्टी लेके मिलाना ॥ ५ ॥ और एक सौ मंत्र जप कर मनुष्याकार पुतली बनावे फिर नीले कपडेसे लपेटकर घरमें गाडना तो शीघ्र निश्चय पितापुत्रमेंभी विद्वेष हो जावे ॥ ६ ॥

चिताभस्मयुतं बभ्रुसर्पयोर्दन्तचूर्णकम् ॥ ७ ॥
प्रथक्पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमंत्रिताम् ॥
उद्याने निखनेद्भूमौ विद्वेषं जायते ध्रुवम् ॥ ८ ॥

अर्थ–चिताकी भस्म मिलाय न्यौला और सांपके दांतोंकें चूर्णको लेवे ॥ ७ ॥ फिर जिन दोनोंका वैर कराना है उनके नामसे दो पुतली बनाय नामसहित अभिमंत्रित करके वनमें जाकर अलग अलग पृथिवीमें गाड देवे तो निश्चय विद्वेष होवे ॥ ८ ॥

गजकेसारिणोर्दंतान्नवनीतेन पेषयेत् ॥
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥९॥
अश्वकेशं गृहीत्वा च महिषं केशसंयुतम् ॥
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात्॥१०॥

अर्थ—हाथी और सिंहके दांतोंका चूर्ण गायके माखनमें मिलाकर जिसके नामसे मंत्र पढकर अग्निमें हवन करे तो दोनोंका आपसमें वैरभाव हो जावे ॥ ९ ॥ तथा घोडेके और भैंसेके केश मिलाय सभामें धूप देवे तो विद्वेषण शीघ्र होवे ॥ १० ॥

गृहीत्वा सल्लकीकंटं निखनेद्भुवि द्वारकम् ॥
कलहो जायते नित्यं जायते नात्र संशयः ॥११॥
यस्य कस्य भवेद्द्वेषो यावज्जीवं भवेत्तदा ॥
तत्पादमृत्तिकायुक्तां शत्रुपांसुसमन्विताम् ॥१२॥
पुत्तली क्रियते सम्यक् स्मशाने निखनेद्भुवि ॥
विद्वेषो जायते सत्यं सिद्धियोगमुदाहृतम् ॥१३॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो नारदाय अमुकं अमुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयईश्वरसंवादे विद्वेषणप्रयोगो नाम पंचमः पटलः समाप्तः ॥ ५ ॥

अर्थ—सेहीका कांटा लेकर जिसके द्वारपर भूमिमें गाड देवे उसके घरमें निस्सन्देह नित्य कलह होवे ॥ ११ ॥ यावज्जीवनपर्य्यन्त जिस किसीमें विद्वेष करना चाहे तो उन दोनों शत्रुओंके पांवतलेकी मिट्टी मिलाय ॥ १२ ॥ दो पुतली बनाय चितामें जाय भूमिमें पृथक् पृथक् नाममंत्रोच्चारणपूर्वक गाड देवे तो सत्य विद्वेषण होवे यह सिद्धियोग है ॥ १३ ॥ यह पांचवां पटल समाप्त भया ॥ ५ ॥

अथ षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

तत्रोच्चाटनम् । ईश्वर उवाच ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ॥
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ॥ १ ॥

अर्थ—अब छठे पटलमें उच्चाटनप्रयोग लिखते हैं—श्रीशिवजी कहते हैं कि अब उच्चाटनविधिवर्णन करूंगा जिसके साधनमात्रसे मनुष्योंका उच्चाटन होता है ॥ १ ॥

ब्रह्मदंडीचिताभस्म शिवलिंगे प्रलेपयेत् ॥
सिद्धार्थं चैव संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ॥ २ ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्रीपुत्रबांधवैस्सह ॥
उच्चाटनं परं चैतन्नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३ ॥

अर्थ—ब्रह्मदंडी, चिताकी भस्म, सरसोंसहित यह शिवलिंगपर लेपन कर शनिके दिन मंत्र जपे,फिर उसका ले जिसके घरमें डाले ॥ २ ॥ उसका उच्चाटन होवे स्त्री पुत्र और बन्धुजनोंसहित, यह श्रेष्ठ उच्चाटन है शंकरजीका कहा असत्य नहीं है ॥ ३ ॥

गृहीत्वा गर्दभधूलीं वामपादेन निश्चितम् ॥
मध्याह्ने भौमवारे च यद्गृहे निखनेन्नरः ॥ ४ ॥
काकोलूकस्य पक्षाणि यस्य चुल्यां खनेद्बुधो ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ५ ॥
उल्लूविष्ठां गृहीत्वा च सिद्धार्थेन समन्विताम् ॥
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं तस्योच्चाटनकं भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—मंगलवारके दिन मध्यान्हसमय गदहा लोटनेके

नीचेकी धूली बायें पांवसे लेकर जिसके घरमें छोडे वह मनुष्य उच्चाटनभावको प्राप्त होवे ॥ ४ ॥ कौवा और उल्लूके पंख रविवारको जिसके चूल्हेमें गाड देवे उसका उच्चाटन होवे यह शिवजीका कहा भया सत्य है ॥ ५ ॥ उल्लूपक्षीकी विष्ठा सरसों सहित लेकर मंत्र पढ जिसके अंगपर छोडे उसका उच्चाटन होवे ॥ ६ ॥

औदुम्बरस्य काष्ठस्य कीलकं चतुरंगुलम् ॥
शयने यस्य निखनेत्तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ॥ ७ ॥
नरास्थिकीलकं द्वारि निखनेच्चतुरंगुलम् ॥
तत्र मूत्रं तु यः कुर्यात्तस्योच्चाटनकं भवेत् ॥८ ॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो भगवते महारुद्राय रौद्र-स्वरूपाय अमुकं सपुत्रबांधवैस्सह शीघ्रमुच्चाटय २ स्वाहा ॥ सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

अर्थ—रविवारके दिन गूलरकी लकडीकी चार अंगुल कील लाकर जिसके शयनस्थानमें अथवा पलंगमें गाड देवे उसका निश्चय उच्चाटन हो जावे ॥ ७ ॥ तथा मनु-

ष्यके हाडकी चार अंगुल कील जिसके नामसे उसके मूत्रस्थानमें गाड देवे वहांपर उसके मूत्र करनेसे उच्चाटन होवे ॥ ८ ॥

मंत्रमें अमुकके स्थानमें शत्रुका नाम उच्चारण करे ॥ सवालक्ष मंत्र जपे तो सिद्धि होवे ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयईश्वरसंवादे उच्चाटन-
प्रयोगो नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

तत्र वशीकरणम् । ईश्वर उवाच ॥

अथातस्सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ॥
यत्प्रयोगाद्वशं यांति नरा नार्यश्च सर्वशः ॥ १ ॥
ब्रह्मदंडी वचा कुष्ठं चूर्णं सूर्यस्य वासरे ॥
तांबूलेन तु यं दद्यात्स वश्यो वर्तते सदा ॥ २ ॥

अर्थ—अब सातवां वशीकरण पटल लिखते हैं—श्रीशिवजी दत्तात्रेयजीसे कहते हैं कि अब आगे उत्तम वशीकारण प्रयोग कहूंगा कि जिसके वशसे सब स्त्री पुरुष

वश हो जाते हैं ॥ १ ॥ ब्रह्मदंडी, वच, कूठ इनका चूर्ण रविवारके दिन पानमें जिसको देवे वह सदा वशमें हो जावे ॥ २ ॥

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह पेषयेत् ॥
विभूत्यया युतं भाले तिलकं लोकवश्यकृत्॥३॥
पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सत्याभिमंत्रितम् ॥
बद्ध्वा सर्वत्र पूज्यंते सर्वलोकवशंकरम् ॥ ४ ॥
अपामार्गस्य मूलं तु कपिलापयसि पेषयेत् ॥
ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्याज्जगत्रयम् ॥ ५ ॥

अर्थ—वरगदवृक्षकी जडको लेके जलमें पीसे और विभूति मिलाय तिलक लगावे तो लोक वश होवे ॥ ३ ॥ पुष्यनक्षत्रमें दिन साठकी जडको मंत्रपूर्वक लाकर फिर उसको अभिमंत्रित कर हाथमें बांधे तो सर्वत्र पूज्य हो तथा लोक वशमें करे ॥ ४ ॥ तथा ओंगाकी जडको पुष्य नक्षत्रमें विधिपूर्वक लावे और कपिला गौके दूधमें पीस-

कर मस्तकपर तिलक लगानेसे तीनों जगत्को वशमें कर लेवे ॥ ५ ॥

रोचनं सहदेवीभ्यां तिलकं लोकवश्यकृत् ॥
गृहीत्वौदुंबरं मूलं ललाटे तिलकं कृतम् ॥ ६ ॥
प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टमात्रो न संशयः ॥
तांबूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ७ ॥
देवदारुं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेद्बुधः ॥
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकवशंकरम् ॥ ८ ॥

अर्थ—गोरोचन, सहदेवी इन दोनोंका तिलक करके लोकको वश करे, तथा गूलरकी जडको लेके मस्तकपर तिलक करे ॥ ६ ॥ तो निस्संदेह देखनेही मात्रसे सबका प्रिय होवे पानके साथ देनेसे सब लोक वश करे ॥ ७ ॥ देवदा रु और सरसोंको लेके बुद्धिवान् जन गुटिका बनाय मुखमें रखकर संभाषण करे तो सब लोकको वश करे॥८॥

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिलाम् ॥
अनामिकाया रक्तेन तिलकं वश्यकारकम् ॥ ९ ॥

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगुं रक्तचन्दनम् ॥
एकीकृत्वा मंत्रसार्द्धं तिलकं वश्यकारकम् ॥ १० ॥
श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलादुग्धपेषयेत् ॥
लेपमात्रशरीराणां सर्वलोकवशंकरम् ॥ ११ ॥

अर्थ—केशर, तगर, कूठ, हरिताल, मैनशिल और अनामिका अंगुलीका रुधिर इनको मिलाय तिलक करे तो वश करे ॥ ९ ॥ गोरोचन, कमलपत्र, कांगनी, लाल-चन्दन इनको मिलाय मंत्र पढ तिलक करे तो उस तिलक-को देखे सो वश होवे ॥ १० ॥ सपेद दूबको लेकर कपिल गौके दूधमें पीसे, फिर उसका लेप शरीरपर करनेसे सब लोकको वशमें करे ॥ ११ ॥

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च ॥
अजादुग्धेन संपेष्य तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ १२ ॥
कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम् ॥
मस्तके तिलकं कुर्य्याद्वशीकरणमुत्तमम् ॥ १३ ॥
अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत् ॥

अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशीकरम् ॥ १४ ॥
धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगन्धं मनश्शिलाम् ॥
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशीकरम् ॥ १५ ॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो नारायणाय सर्वलोकान्मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे सर्वलोकवशीकरणं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अर्थ—बेलके पत्ता तथा बिजोरानींबू लेके बकरीके दूधमें पीसकर तिलक देवे तो लोकको वश करे ॥ १२ ॥ घीग्वारकी जड लेके भांगके बीज मिलाय उसका तिलक मस्तकपर करे तो उत्तम वशीकरण होवे ॥ १३ ॥ भांगाके बीज बकरीके दूधमें मिलाय मस्तकपर तिलक करनेसे सबको वश करे ॥ १४ ॥ आंवलेके रसमें अष्टगन्ध और मैनशिल मिलाय मस्तकपर तिलक करे तो सबको वश करे ॥ १५ ॥ मंत्र मूलमें देखना ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रका सातवां पटल समाप्त भया ॥ ७ ॥

अथाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

तत्र स्त्रीवशीकरणम् ॥

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूरपुष्पकम् ॥
शाखां लतां गृहीत्वा तु पत्रमूलं तथैव च ॥ १ ॥
पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ॥
तिलके स्त्रीं वशीकुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती ॥ २ ॥

अर्थ–अब आठवे पटलमें स्त्रीवशीकरण कहते हैं। रविवारको विधिपूर्वक काले धतूरेके फूल लाकर तथा शाखा व लता तथा पत्र व मूल लाकर ॥ १ ॥ कपूर मिलाय पीसे बराबर इसके केशर और गोरोचन मिलाय तिलक करे तो जो साक्षात् अरुंधतीभी हो तोभी वशमें हो जावे ॥ २ ॥

कांकजंघा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् ॥
दत्ते तु भोजने बालां वशीकरणमद्भुतम् ॥ ३ ॥
चिताभस्म वचा कुष्ठं कुंकुमं रोचनं समम् ॥
चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ४ ॥

अर्थ—काकजंघा (कौवा गोडी), वच कूठ इनमें रक्तसहित वीर्य मिलाय भोजनमें स्त्रीको देवे तो अद्भुत वशीकरण होवे ॥ ३ ॥ चिताकी भस्म, वच, कूठ, केशर, गोरोचन इनको बराबर ले चूर्ण बनाय जिस स्त्रीके शिर-पर डाले वह वश्य होवे यह अद्भुत वशीकरण है ॥ ४ ॥

करपादनखानां च भस्म तांबूलपत्रके ॥
दातव्यं रविवारे च वशीकरणमद्भुतम् ॥ ५ ॥
भौमवारे लवंगं च लिंगच्छिद्रे विनिक्षिपेत् ॥
बुधे निष्कास्य तांबूले दद्यात्सा वशगा भवेत् ६॥

अर्थ—हाथ, पाँवके नखोंकी भस्म रविवारको पानमें रखकर खानेको देवे तो अद्भुत वशीकरण होवे ॥ ५ ॥ मंगलवारके दिन लिंगके छिद्रमें एक लौंग रक्खे और बुधवारको निकालकर तांबूलपत्रमें जिस स्त्रीको खिलावे वह वशमें होवे ॥ ६ ॥

वामपादतलात्पांसुं वनितायाः शनौ हरेत् ॥
तस्य पुत्तलिकां कुर्यात्तस्याः केशान्नियोजयेत्॥७

नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ॥
सिन्दूरेण समायुक्तां निखनेद्द्वारदेशके ॥ ८ ॥
उल्लंघनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते च चिरं भुवि ॥९॥

अर्थ—शनिवारको स्त्रीके वायें पांवके नीचेकी धूली लेके पुतली वनावे और उसीके केश पुतलीके लगावे॥७॥ फिर काले वस्त्रसे लपेटकर उसकी भगमें अपने वीर्यका निक्षेप और सिंदूर लगाकर उसके द्वारपर गाड देवे ॥८॥ उसको उल्लंघन करके वह स्त्री वश्य होवे प्राणसे धनसेभी वशीभूत होजावे इस प्रकार कृतज्ञ पुरुष उसको वश करके बहुत कालपर्यन्त पृथिवीपर आनन्द भोग करे ॥ ९ ॥

ताम्बूलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनःशिलाम् ॥
भौमे च तिलकं कृत्वा वशीकरणयोषिताम्॥१०॥
उलूकमांसं गृहीत्वा तु खाने पाने प्रदापयेत् ॥
सिद्धियोगमिदं ज्ञेयं विना मंत्रेण सिद्ध्यति॥११॥

अर्थ—तांबूल (पान) के रसमें तालमखाना, मन-

शिलको पीसे और भौमवारके दिन तिलक करके जिस किसी स्त्रीके सन्मुख जाय संभाषण करे सो वशमें होवे ॥ १० ॥ तथा उल्लूपक्षिके मांसको लेके खानपानमें देवे तो वशीकरण होवे यह विना मंत्रका सिद्धियोग जानिये ॥ ११ ॥

गोरोचनं पद्मपत्रे लिखेद्यत्तिलकं कृतम् ॥
शनिवारे कृते योगे वशीभवति निश्चितम्॥ १२॥

अर्थ-गोरोचनसे कमलपत्रपर मंत्र लिखकर फिर उसका तिलक करे शनिवारके दिन यह योग करनेसे निश्चय वश होवे ॥ १२ ॥

अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो कामाक्ष्यै देव्यै अमुकीं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा॥ सपादलक्षजपात्सिद्धिः ॥

इति दत्तात्रेयतंत्रे स्त्रीवशीकरणं नामाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

यह आठवां पटल समाप्त भया ॥ ८ ॥

अथ नवमः पटलः ॥ ९ ॥

तत्र पतिवशीकरणम् । पुरुषवशीकरणप्रकारः ॥
गृहीत्वा मालतीपुष्पं पटसूत्रेण वर्तिका ॥
भृगुवारे नृकपाले एरंडं तैलकज्जलम् ॥ १ ॥
कज्जलं चांजयेन्नेत्रे दृष्टमात्रे वशीभवेत् ॥
विना मंत्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथा शंकरोदितम् २॥

अर्थ—अब नौवां पटल लिखते हें तहां पतिवशीकरण प्रकार कहते हैं। चमेलीके फूल और चरणोंतक नापकर सूतकी बत्ती बनाय शुक्रवारके दिन मनुष्यके कपालमें रख अंडीके तेलमे जलाय कज्जल पारे ॥ १ ॥ इस कज्जलका अंजन नेत्रोंमें करे तो देखनेही मात्रसे पति वशमें हो जावे. विना मंत्रका यह सिद्धियोग है ऐसा शिवजीका कहा असत्य नहीं है ॥ २ ॥

गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम् ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिवश्यकरं परम् ॥३॥

पंचांगदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपसंयुतम् ॥
योनिर्लेपे पतिं दासं करोत्येव च दुर्भगा ॥ ४ ॥

अर्थ–गोरोचन, और योनिका रक्त केलेके रसमें मिलाय तिलक करनेसे पति वश होवे॥ ३ ॥ तथा अनारका पंचांग (पत्र, फल, फूल, काष्ठ, जड) पीसकर सफेद सरसों मिलाय योनिपर लेप करे तो संभोग करनेसे पति दास हो जावे ॥ ४ ॥

मालतीपुष्पसंयुक्तं कटुतैलेन पाचितम् ॥
भगे यल्लेपयेन्नारी रतौ मोहयते पतिम् ॥ ५ ॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

अर्थ–चमेलीके फूल कडुवे तेलमें मिलाय पचावे और भगपर जो स्त्री लेप करे सो रतिसमय पतिको मोहित कर लेवे ॥ ५ ॥ मंत्रको एक लक्ष जपे ॥

अथ राजवश्यम् ।

कुंकुमं चंदनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम् ॥

गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ ६ ॥
हरितालं चाश्वगन्धां कर्पूरं च मनश्शिलाम् ॥
अजाक्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ ७ ॥

अर्थ—केशर, चंदन, कपूर, तुलसीदल इनको लेके गौके दूधमें पीस तिलक करे तो राजाको वश्य करे ॥ ६ ॥ हरताल, अश्वगंध, कपूर, मैनसील इनको बकरीके दूधके साथ तिलक करनेसे राजा वश हो जावे अर्थात् यह प्रयोग राजाको वश करनेमें श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम् ॥
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥ ८ ॥
पातयेदंजनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये ॥
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ॥ ९ ॥

अर्थ—तालीस, कूठ, तगर इन्होंसे लेपी हुई रेशमी कपडेकी बत्ती बनाकर सरसोंके तेलसे मनुष्यकी खोपरीमें काजल ॥ ८ ॥ पारे उस अंजनके करनेसे जो कोई दृष्टि-के सामने आवे सो सब दासके तुल्य वश हो जावे ॥ ९ ॥

गृहीत्वा सुदर्शनं मूलं पुष्यनक्षत्रभास्करे ॥
कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेल्लिप्तवस्त्रके ॥ १० ॥
विष्णुक्रांतानि बीजानि तैलं प्रज्वाल्य दीपके ॥
कज्जलं पातयेद्रात्रौ शुचिपूर्वं समाहितः ॥ ११ ॥
कज्जलं चांजयेन्नेत्रे राजवश्यकरं परम् ॥
चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकेषु का कथा ॥१२॥

अर्थ—सुदर्शनकी जडको पुष्य नक्षत्रके सूर्यमें कपूर और तुलसी दलको मिलाय वस्त्रपर लेपे ॥ १० ॥ फिर उस वस्त्रकी बत्ती बनाय विष्णुक्रांताके बीजोंका तेल ले दीपकमें डाल प्रज्वलित करे और काजल पारे रात्रिमें पवित्रतापूर्वक काजल बनाय ॥ ११ ॥ उस काजलको नेत्रोंमें आंजे तो देखने व संभाषण करनेसे चक्रवर्ती राजाभी वश्य होव अन्य मनुष्योंकी कथा क्या कहनी १२

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियां शुचिः ॥
वने गत्वा ह्यपामार्गं वृक्षं पश्येदुदङ्मुखः ॥१३ ॥
तत्र विप्रं समाहूय पूजां कृत्वा यथाविधि ॥

कर्षमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥ १४ ॥
तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकान् ॥
मौनेन स्वगृहं गच्छेत्कृत्वा बीजांस्तु निस्तुषान्॥
गौरीशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ॥
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ॥ १६ ॥

अर्थ—अमावास्या मंगलवारके दिन पवित्रतापूर्वक नित्यक्रिया (स्नान पूजनादि) करके वनमें जाकर उत्तर-मुख होके अपामार्ग (ओंगा) का वृक्ष देखे ॥ १३ ॥ वहांपर ब्राह्मणको बुलाय उसे एक कर्ष (१६ मासे) सुवर्ण यथाविधि पूजन करके देवे ॥ १४ ॥ फिर उस ब्राह्मणकेही हाथसे अपामार्गका बीज निकलवा लेवे और बीज लेकर मौन धारण कर अपने घरको आवे अनंतर बीजोंकी भूसी निकालकर साफ करे ॥ १५ ॥ फिर गौरीनाथ (शिव) जीका हृदयमें ध्यान करके किसीभी उपायमें राजाको खिलावे तो वह राजा जबतक जीवे तब तक वशमें रहे ॥ १६ ॥

चक्रवर्ती वशं याति नान्यथा मम भाषितम् ॥
न नीचाय प्रदातव्यं प्रयोगमनुभूतिदम् ॥ १७
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो भास्कराय जगदात्मने राजानं वशमानय कार्यं कुरु कुरु फट् स्वाहा। सपादलक्षजपात्सिद्धिः ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे राजवश्यकरं नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

अर्थ—इस पूर्वोक्त प्रयोगसे चक्रवर्ती राजाभी व[illegible] होता है यह असत्य नहीं श्रीशीवजी कहते हैं कि य[illegible] अनुभव किया भया प्रयोग नीच जनके अर्थ नहीं दे[illegible] ॥ १७ ॥ सवालक्ष मंत्र जपकर सिद्धिको प्राप्त होवे

यह नवम पटल समाप्त भया ॥ ९ ॥

अथ दशमः पटलः ॥ १० ॥

तत्राकर्षणम् ।

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ॥

राजा प्रजा च सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥
कृष्णधत्तूरपत्राणि रसरोचनसंयुतम् ॥
करवीरस्य लेखन्या यंत्रं पंचदशं लिखेत् ॥ २ ॥
भूर्जपत्रेषु तन्नाम्ना तापयेत्खदिराग्निना ॥
शतयोजनगो वापि शीघ्रमायाति नान्यथा॥ ३ ॥

अर्थ–अब दशमपटलमें आकर्षण प्रयोग लिखते हैं। श्रीशिवजी बोले हे दत्तात्रेयजी ! अब सिद्धिके देनेवाले आकर्षणप्रयोगकी विधिको कहता हूं सावधान होकर श्रवण करो जिससे राजा प्रजा सबका आकर्षण होवे है ॥ १ ॥ काले धतूरेके पत्तोंके रसमें गोरोचन मिलाय कनेरकी लेखनीसे पंद्रहवां यंत्र लिखे ॥ २ ॥ भोजपत्रपर लिखनेकी अनन्तर जिसका आकर्षण करना होय उसके नामसे खैरकी लकडीकी अग्निसे तपावे तो सौ योजनपर स्थित मनुष्यभी आकर्षण होके (मंत्र यंत्र द्वारा खींचकर) शीघ्र आ जावे अन्यथा नहीं जानना ॥ ३ ॥

नृकपाले लिखेद्यंत्रं गोरोचनसकुंकुमैः ॥

खदिरांगारकैस्ताप्यं त्रिसंध्यं यस्य नामतः॥ ४
मंत्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ॥
ब्रह्मदंडीं समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत् ॥ ५
कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगे विनिक्षिपेत्।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम्॥६
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो वीरवेतालाय मंदराचल-
वासिने अमुकं आकर्षय २ ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा।
चतुर्लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे आकर्षणप्रयोगो नाम
दशमः पटलः समाप्तः ॥ १० ॥

अर्थ—मनुष्यकी खोपरीमें केशर, गोरोचन मिला
पंद्रहवां यंत्र लिखना और उसके नामसे तीनों काल
खैरकी अग्निसे तपावे ॥ ४ ॥ और मंत्रका जप करे त
उर्वशीकोभी आकर्षण कर लेवे तथा ब्रह्मदंडी पुष्यार्कके
दिन लाकर चूर्ण करे ॥ ५ ॥ जिस स्त्रीमें कामना हो रही
हो इसके मस्तक पर चूर्ण डाले तो वह स्त्री पीछे पीछे

फिरने लगे हमारा यह कहना सत्य है ॥ ६ ॥ इसमेंका मूल मंत्र चार लक्ष जपनेसे सिद्धि होवे॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें आकर्षणप्रयोग नाम दशवां पटल समाप्त भया ॥ १० ॥

अथ एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

तत्रैन्द्रजालकौतुकम् ॥

इन्द्रजालं विना रक्षां न भवतीति निश्चितम् ॥ रक्षामंत्रो महामंत्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रकौतुकानि दर्शय सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मूलमंत्रः॥ अथ रक्षामंत्रः ॥ ॐ नमो परब्रह्मपरमात्मने मम शरीररक्षां कुरु कुरु स्वाहा ॥

अर्थ—अब ग्यारहवां पटल लिखते हैं. जिसमें इन्द्रजाल कौतुकका वर्णन है. इन्द्रजाल रक्षा विना कुछ निश्चय नहीं होता है इस हेतु सब सिद्धिका देनेवाला रक्षाका मंत्र और महामंत्र आगे लिखा भया देखना

॥ १ ॥ ॐ नमो नारायणाय इत्यादि मूलमंत्र है ॥ ॐ नमो परब्रह्मपरमात्मने इत्यादि रक्षामंत्र है ॥

भौमवारे सर्पमुखे क्षिप्तं कार्पासबीजकम् ॥
उद्भवं बीजकार्पासं ज्वलयेरंडतैलके ॥ २ ॥
तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवद्भवति ध्रुवम् ॥
वर्तिशांतिः प्रकर्तव्या महाकौतुक शाम्यति ॥३

अर्थ—मंगलवारके दिन सांपके मुखमें कपासके बीज बोवे फिर उन बीजोंसे उत्पन्न कपाससे बत्ती बनावे अंडीके तेल दीपकमें डाल देवे ॥ २ ॥ फिर उस पूर्वोक्त कपासकी बत्तीको रात्रिसमय जलावे तो सब पदार्थ सर्पसमान उस घरमें दीख पडें जो बत्ती शांत कर देवे तो सब कौतुक शान्त हो जावे ॥ ३ ॥

वृश्चिकस्य मुखेप्येवं सार्षपं बीजं निक्षिपेत् ॥
तत्तैलं ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिकं भवति ध्रुवम्॥४॥

अर्थ—वींछीके मुखमें सरसोंके बीज बोवे उसमेंसे

निकले हुए तेलको रात्रिसमय दीपकमें जलावे तो निश्चय वीछी दीख पडे ॥ ४ ॥

कार्पासाणि च बीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत् ॥
तद्वर्तिं ज्वालयेत्संध्यां नकुलो दृश्यते ध्रुवम् ५॥
उल्लूकस्य कपालेन घृतेन दत्तकज्जलम् ॥
तेन नेत्रांजनं कृत्वा रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥६॥

अर्थ—कपासके बीज न्यौलेके मुखमें बोयकर उसके कपासकी बत्तीको दीपकमें संध्यासमय जलावे तो न्यौले ही न्योले दीख पडें ॥ ५ ॥ तथा उल्लूपक्षीकी खोपरीमें घीको जलाय कज्जल पारे तिसका अंजन नेत्रोंमें करके पुस्तक पढे तो रात्रिसमयमेंभी पुस्तक पढने लगे इतनी ज्योति बढे ॥ ६ ॥

चन्द्रवारे च निक्षिप्य मुखे मार्जार निश्चितम् ॥
तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ मार्जारो दृश्यते ध्रुवम् ॥७॥
एवं यस्य मुखे क्षिप्तं तदुद्भवसुवर्तिकम् ॥
दीपं प्रज्वालयेद्रात्रौ स पश्येन्निश्चितं ध्रुवम् ॥८॥

अर्थ–सोमवारके दिन बिल्लीके मुखमें कपासके बीज बोयकर उस कपासकी बत्ती बनाय रात्रिसमय दीपकमें जलावे तो निश्चय बिल्ली ही बिल्ली दीख पडे ॥ ७ ॥ एवं जिस जीवके मुखमें कपास बोवे उससे उत्पन्न बत्ती-को दीपकमें रात्रिमें जलावे तो वही जीव दीख पडे ॥८॥

यानि कानि च जीवानि जगतस्थलमेव च ॥
अंकोलबीजे निक्षिप्ते मुखे भूमितले ध्रुवम् ॥९॥
तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहे वेष्टितं कुरु ॥
तद्रूपी च भवेत्सद्यो नान्यथा शंकरोदितम्॥१०॥

अर्थ–जितने जीवमात्र संसारमें हैं उनमेंसे कोईभी जीव हो उसके मुखमें अंकोलके बीज बोयकर पृथिवीमें गाड देवे ॥ ९ ॥ उससे वृक्ष उत्पन्न होवे तब उसके बीज लेकर लोहेके त्रिकोणयंत्रमें लपेटकर मुखमें रखे तो वह मनुष्य उसी जीवके समान रूपका अन्य मनुष्योंको दीख पडे ॥ १० ॥

खंजरीटं सजीवं तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ॥

पंजरे रक्षयेद्यावत्तावद्भाद्रपदं भवेत् ॥ ११ ॥
अदृश्यं जायते सत्यं नेत्रेणापि न दृश्यते ॥
करणं तु शिखाग्राह्यं त्रिलोहे वेष्टितं कुरु ॥१२॥
गुटिकामुखमध्यस्थ अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् १३

अर्थ--खंजन पक्षीको सजीव (जीता भया) पकड-कर फाल्गुन मासमें उसे पिंजरेमें रखकर पालना करे भाद्रमासतक ॥ ११ ॥ तो भाद्रमासमें वह अदृश्य हो जावेगा अर्थात् नेत्रोंसेभी दीख नहीं पडेगा तब उसको पकडकर उसकी चोटी उखाड लेवे फिर उस चोटीको चांदीके तावीजमें रखकर गुटिका बना लेवे ॥ १२ ॥ उस गुटिकाको जो मनुष्य मुखमें राखे सो अदृश्य होवे अर्थात् किसीकों दीख न पडे यह अदृश्य प्रयोग है हर किसीको नहीं देवे शंकरजीका कहा भया सत्य है ॥ १३ ॥

अंकोलस्य तु बीजानि तत्तैलं गृह्यते पुनः ॥
धूपं दत्त्वा तु तत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१४॥

पद्मबीजं तु तत्तैलं निक्षिपेच्च तडागके ॥
तत्क्षणाज्जायते देवि तडागात्कमलोद्भवः॥१५॥
तत्तैलमाम्रबीजे तु निक्षिपेद्बिन्दुमात्रतः ॥
जायते सफलो वृक्षो नान्यथा शंकरोदितम् १६

अर्थ-अंकोलके बीज लेके तेलमें डाल देवे फिर धूप देवे तो तेल सिद्धिदायक हो जावे ॥ १४ ॥ फिर कमलके बीज उस तेलमें डाल देवे अनन्तर वे तेलमें सिद्ध हुए बीज जिस तडागमें डाल देवे तो तत्काल तडागसे कमलका वृक्ष उगे ॥ १५ ॥ तथा उस तेलको आंबके बीजमें एक बिन्दुमात्रभी छोट देवे फलसहित वृक्ष उत्पन्न होवे यह शंकरजीका कहा भया असत्य नहीं ॥ १६ ॥

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा त्वेरंडतैलेन पेषयेत् ॥
यस्यांगे निक्षिपेद्बिन्दुं विक्षिप्तो जायते नरः१७॥
मातुलिंगस्य बीजेन तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥
लेपयेत्ताम्रपात्रे तन्मध्याह्ने च विलोकयेत् १८॥
रथेन सह चाकारं दृश्यते भास्करो ध्रुवम् ॥

विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात् सिद्धियोगमुदाहृतम् १९

अर्थ—उलूकपक्षीकी विष्ठाको लेके एरंडके तेलमें डाल देवे फिर उसको जिसके अंगपर एक बिन्दुमात्र छिडक दे तो मनुष्य अदृश्य हो जावे ॥ १७ ॥ बिजौरानींबूके तेलको यत्नसे निकालकर ताम्रपत्रपर लेप करके मध्यान्हसमय ताम्रपत्रपर सूर्यके सन्मुख करके देखे ॥ १८ ॥ तो रथसहित सूर्यका पूर्ण आकार निश्चय दीख पडेगा यह विना मंत्रका प्रयोग सिद्धि होता है सो जानना ॥ १९ ॥

वाराहीक्रांतिकामूलं सिद्धार्थस्नेहलेपितम् ॥
मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबंधं करोत्यलम् २०
भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ॥
कृकलाया मुखे क्षिप्त्वा कंकवृक्षं च बंधयेत् २१
मूत्रबंधं भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी ॥
विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोगमुदाहृतम् २२

अर्थ—बिलाईकंद और कटेलीकी जडको सरसोंके तेलमें घेवे. फिर जिसके मुखपर मंत्र पढकर छोडे उसकी

दृष्टि बंध जावे ॥ २० ॥ मंगलवारके दिन शत्रुके मूत्रसे मिट्टीको ग्रहण करके गिर्गिटके मुखमें रखकर बंद कर देवे और धतूरेके वृक्षको जाकर बांध देवे ॥ २१ ॥ तो उस शत्रुका मूत्र बंद हो जावे फिर जब खोल लेवे तो मूत्र खुल जावे यह विना मंत्रका प्रयोग सिद्धि है ॥ २२॥

रविवारे सकृद्धन्यात् छछुंदरीं तदा निशि ॥
ततः सोमे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः॥२३॥
तत्त्वचायां क्षिपेद्बंधं मूत्रबंधनकारकम् ॥
उद्धृते च सुखी चैष सिद्धियोगमुदाहृतम् ॥२४॥

अर्थ–रविवारके दिन रात्रिसमय छछूंदरको एकही चोटमें मारे और उसकी खालको अच्छे प्रकार उतार लेवे फिर सोमवारके दिन शत्रुके मूत्रस्थानकी मिट्टी लेवे॥२३॥ अनंतर उस खालके पंजरमें मिट्टी भरकर सींव देवे तो शत्रुका मूत्र बंद हो जावे उधेडनेसे सुखी होवे यह सिद्धिप्रयोग है ॥ २४ ॥

सिंदूरं गन्धकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् ॥

तल्लिप्तवस्त्रशिरसी अग्निश्च दृश्यते ध्रुवम्॥२५॥
श्वेतांजनं समादाय पुष्पागस्त्यरसेन च॥
पिष्ट्वा सप्तदिनं यावदष्टमेह्नि यथाविधि २६॥
अंजनं चांजयेन्नेत्रे पश्यते चाह्नि तारकम्॥
कुक्कुटस्यांडमादाय च्छिद्रेण पारदं क्षिपेत्॥
सम्मुखे भास्करं कृत्वा आकाशं गच्छति ध्रुवम्॥
विना मंत्रेण सिद्धिश्च नान्यथा शंकरोदितम्२७

अर्थ–सेंदुर, गन्धक, हरताल, मनशिल इनको बराबर लेकर पीस लेवे फिर उसको कपडेपर लेप करे उसको शिरसे ओढे तो निश्चय अग्निसमान दीखे ॥ २५ ॥ सपेद सुरमाको लेकर अगस्तके फूलोंके रसमें सात दिनपर्यन्त घोटे फिर आठवें दिन यथाविधिसे ॥ २६ ॥ उस सुरमेका नेत्रोंमें अंजन करे तो दिनमें तारे दीख पडें । तथा मुर्गके अंडेको लेके उसमें पारा भर दे और सूर्यके सन्मुख रख देवे तो वह अंडा निश्चय आकाशको उड जावे अर्थात्

उछलने लगेगा विना मंत्रके यह शंकरजीका कहा भया सिद्धिप्रयोग अन्यथा नहीं है ॥ २७ ॥

अर्कक्षीरं वटक्षीरं क्षीरमौदुम्बरं तथा ॥
गृहीत्वा पात्रके क्षिप्तं जलपूर्णं करोति च ॥
दुग्धं संजायते तत्र महाकौतुककौतुकम् ॥२८॥

अर्थ–आकका दूध, वटवृक्षका दूध, गूलरका दूध इनको लेके पात्रमें डाले फिर उसमें जल भर देवे तो दूध-ही प्रतीत होवेगा यह जलसे दूध बनानेका महाकौतुक (खेल) है ॥ २८ ॥

गृहीत्वा विजयाबीजं तत्तैलं तु समाहरेत् ॥
तत्तैलमहिफेनं च विषं जातीफलं तथा ॥ २९॥
धत्तूरबीजचूर्णं तु गृहीत्वा च समं समम् ॥
नवनीतेन तैलेन सर्वमौषधपेषणम् ॥ ३० ॥
अष्टयामकृते तंत्रे महाकौतुककौतुकम् ॥
तत्तैलं बिन्दुमात्रेण लिंगलेपं च कारयेत् ॥
भोगेच्छा सर्वदा तस्य दृढं दीर्घं भविष्यति ३१॥

अर्थ–भांगके बीज लेकर तेल निकाले उस तेलको अफीमको, विषको, जायफलको, तथा ॥ २९ ॥ धतूरेके बीजोंके चूर्णको बराबर बराबर लेकर माखन व तेलमें इन सब औषधियोंको पीसे ॥ ३० ॥ आठ प्रहरपर्यन्त घोटनेसे महाकौतुकरूप यह तंत्र सिद्ध होता है कि इस तेलका एक बिन्दुमात्र लिंगपर लेप करे तो संभोग करनेसे इच्छा तृप्त नहीं होवे और लिंग उसका पुष्ट और बडा हो जावेगा ॥ ३१ ॥

रविवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकाभाण्डषण्मुखम् ॥
तस्यमध्ये स्थापयेत्तदर्ककीलं नवांगुलम्॥३२॥
श्वेतदूर्वां च संयुक्तं चाश्वगंधं मनःशिला ॥
ताम्बूलं संयुतं कृत्वा तुलसीदलमेव च ॥ ३३ ॥
अपामार्गस्य पत्रं तु धात्रीपत्रं तथैव च ॥
वटपत्रं तथा मध्ये घृतमिष्टान्नदुग्धकम् ॥ ३४॥
मुखं वस्त्रेण संवेष्ट्य निखनेत्सस्यमध्यके ॥
तस्योपरि भूर्जपत्रे यंत्रं पंचदशं लिखेत् ॥ ३५ ॥

शलभामृगयामूषाश्रृगलाकांतकं तथा ॥
पशुपक्षिनराश्चौराः कीलनं जायते तदा ॥३६॥
वसुन्धरा सस्यपूर्णा न विघ्नं परिभूयते ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम्३७

अर्थ— रविवारके दिन छः मुंहकी एक हांडी लेकर उसके बीच नौ अंगुलकी कील आकवृक्षकी रखे ॥ ३२ ॥ और सफेद दूब, असगन्ध, मनशिल, पान तुलसीदल ३३ ओंगाके पत्र, आंवलेके पत्ते, वट (बर्गद) के पत्ते तथा घी, मिष्टान्न, दूध ॥ ३४ ॥ यह सब उसमें डाल कपडेसे हांडीका मुख लपेटकर धान्ययुक्त खेतमें जाकर गाड देवे उसके ऊपर भोजपत्रपर पंद्रहवां यंत्र लिखकर रख देवे ॥ ३५ ॥ तो टीडी, हिरण, मूसे, सियार तथा अन्य वनके पशु पक्षी चौर आदिका कीलन हो जावे ॥ ३६ ॥ और पृथिवी धान्यसे पूर्ण होवे किसी प्रकारका विघ्न नहीं होवे यह प्रयोग हरएक किसीको नहीं देवे यह शिवजीका कहा भया अन्यथा नहीं है ॥ ३७ ॥

पुष्यार्के तु समागृह्य मूलं श्वेतार्कसम्भवम् ॥
अंगुष्ठप्रतिमां तस्य प्रतिमां तु प्रपूजयेत् ॥३८॥
गणनाथस्वरूपं तु भक्त्या रक्ताश्वमारजैः ॥
कुसुमैश्चापि गन्धाद्यैर्हविष्याशी जितेन्द्रियः ३९
पूजयेद्वाममंत्रैश्च तद्बीजानि नमोऽन्तकैः ॥
यान्यान्प्रार्थयते कामान्मासैकेन तु ताँल्लभेत्४०
प्रत्येकं काम्यसिद्ध्यर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ॥
गणेशबीजमाह ॥ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण पूजयेत् ॥ ॐ ह्रीं पूर्वदयां । ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण रक्ताश्वमारपुष्पाणि घृतक्षौद्रयुतानि जुहुयात् । वांछितं ददाति। ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिकरीं ह्रीं नमः॥ अनेन मंत्रेण रक्तकुसुममेकं जप्त्वा नित्यं क्षिपेत्। ततो भगवती वरदा अष्टगुणानामेकं गुणं ददाति ॥

अर्थ–रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र हो तब एक अंगुल प्रमाण सफेद आककी जड लाकर उसके द्वारा अंगुष्ठप्रमाण

गणेशजीकी मूर्ति बनावे और पूजन करे ॥ ३८ ॥ अनन्तर जितेन्द्रिय और हविष्यान्नभोगी होकर भक्तिपूर्वक लाल कनेरके फूल और गन्धादि सामग्रीसे ॥ ३९ ॥ मंत्र पढकर श्रीगणेशजीके स्वरूपकी पूजा करे गणेशके बीज मंत्रसे अन्तमें नमः शब्दका उच्चारण करता भया पूजन करे तथा जिन जिन कामनाओंकी प्रार्थना करे ॥ ४० ॥ प्रत्येक कामनाकी सिद्धिके अर्थ एक मासपर्यंत पूजन करे तो कामना सफल होवे । ॐ अंतरिक्षाय नमः । इस मंत्रसे पूजा करनी योग्य है । ॐ ह्रीं पूर्वदयां फट् स्वाहा ॥ इस मंत्रसे घृत और शहत मिलाकर लाल कनेरके फूलोंसे हवनमें आहुति देवे इस प्रकार करनेसे देवता मनोकामना पूर्ण करे है ॥ अतिरिक्त इसके नित्यप्रति । ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिकरीं ह्रीं नमः ॥ एक लाल फूल हाथमें लेकर यह मंत्र पढकर नित्य चढावे तो वर देनेवाली भगवती आठ गुणोंमेंसे एक गुण अवश्य देवे ॥

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षवन्दां च धारयेत्करे ॥

वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम्॥४१॥
अनेन ग्राहयेत्स्वातिनक्षत्रे बदरीभवम् ॥
वन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्रार्थ्यते जनैः॥४२
तत्क्षणात्प्राप्यते सर्वं मंत्रमात्रैव कथ्यते ॥
ॐअन्तरिक्षाय स्वाहा, अनेन ग्राहयेत् ॥ ४३ ॥
इति दत्तात्रेयतंत्रे इंद्रजालकौतुकदर्शनं
नामैकादशः पटलः ॥ ११ ॥

अर्थ—कृत्तिकानक्षत्रमें मूलमें लिखा भया मंत्र पढकर थूहरके वृक्षका बांदा हाथमें बांधे तो वाक्यसिद्धि होवे यह महाआश्चर्ययुक्त प्रयोग है ॥४१॥ स्वातिनक्षत्रमें उक्त मंत्रसे बेरीके वृक्षका बांदा लाकर हाथमें धारण करनेसे जिस जिस वस्तुकी कामना की जाय ॥ ४२ ॥ वह उसी समय सब कामना पूर्ण हो जाती है ॥ ४३ ॥
यह दत्तात्रेयतंत्रका ग्यारहवां पटल समाप्त भया ॥ ११ ॥

अथ द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

तत्र यक्षिणीसाधनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ॥

यस्यसिद्धौ मनुष्याणां सर्वेसिद्ध्यन्ति ह्च्छयाः

अर्थ–अब बारहवें पटलमें यक्षिणीसाधन वर्णन करते हैं श्रीशिवजी बोले कि अब मैं यक्षिणियोंका साधन वर्णन करता हूं जिसके साधनमात्रसे मनुष्योंकी सम्पूर्ण मनोकामनासिद्धि होती है ॥ १ ॥

आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः॥
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः॥२ ॥
प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते ॥
मासमात्रप्रयोगोयं निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ॥ ३ ॥
निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ॥
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ ४ ॥

अर्थ–आषाढीपूर्णिमाके दिन क्षौरादिक करके गुरु शुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षणीका साधन करे ॥ २ ॥ श्रावणमासके कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे चन्द्रबल देखकर एक मासमात्रका यह प्रयोग है निर्विघ्नतापूर्वक साधन करना ॥ ३ ॥ निर्जन वनमें जाकर बिल्ववृक्षकी जड़समीप

बैठकर षोडशोपचार पूजन रुद्रपाठसहित श्रीशिवजीका करे ॥ ४ ॥

त्र्यम्बकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ॥
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥ ५ ॥
मंत्रः ॥ यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव ॥
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः॥ ६॥
इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥
ब्रह्मचर्य्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥ ७ ॥
रात्रेस्तु मध्यमौ यामौ विनिद्रो मितभोजनः ॥
विल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ॥८॥
अथ मंत्रः । ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्य्यप्रदात्र्यै नमः ॥

अर्थ—(त्र्यम्बकं यजामा हे०) इस मंत्रका पांच हजार जप नित्यप्रति करना और प्रतिदिन कुबेरका पूजन करना ॥ ५ ॥ कुबेरका मंत्र (यक्षराज नमस्तुभ्यं०) इत्यादि मंत्र है इसका अर्थ यह है हे यक्षराज ! शिवजीके

प्रिय भाई ! तुमको नमस्कार है एक यक्षिणी नित्य हमारे वशमें रहे सो तुम करो इससे तुमको नमस्कार है ॥ ६ ॥ यह कुबेरका मंत्र एक सौ आठ वार दिनको जपना ब्रह्मचर्य धारण कर मौनव्रत हो हविष्यान्न भोजन करता हुआ पूजन जप करना ॥ ७ ॥ रात्रिमें मध्यके दो प्रहरमें निद्रारहित थोडा भोजन करके बिल्ववृक्षके ऊपर बैठकर इस मंत्रका जप करे ॥ ८ ॥ और मूलमें मंत्र ॐ क्लीं ह्रीं ऐं० इत्यादि है ॥

इति मंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम् ॥
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ॥ ९ ॥
मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ॥
नानारूपधरा यक्षी क्वचित्तत्रागमिष्यति ॥ १० ॥
तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपे संसक्तमानसः ॥
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥ ११

अर्थ-ऊपर कहे हुए इस मंत्रका जप तीन हजार बिल्ववृक्षपर पढकर आलस्यरहित मासपर्यन्त करे ॥ ९ ॥

और मदिरा, मांस तथा बलिदानके निमित्त नित्यही पास रख लेवे इस कारण कि अनेकरूप धारण करनेवाली यक्षिणी किस दिन वहां आ जावेगी ॥ १० ॥ जिस दिन वह यक्षिणी वहां आ जावे उसको देखकर भय नहीं करे केवल जपमें चित्तको लगाये रहे, जब बलिको ग्रहण कर-के यक्षिणी वरदान देनेको समर्थ होवे ॥ ११ ॥

तदा वरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ॥
धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम् ॥१२॥
भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ॥
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥१३॥
राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम् ॥
एतदन्यद्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ॥१४॥

अर्थ—तिस समय जो मनमें इच्छा हो सो वरदान मांग लेवे, धन लानेके निमित्त कहे अथवा कानमें त्रिलोकीकी बात कहनेके वास्ते वरदान मांग ले ॥ १२ ॥ वा भोग भोगनेके निमित्त अथवा नृत्य देखनेके निमित्त मांग

ले वा कोई प्राणीके लानेके वास्ते तथा स्त्रीको लानेके वास्ते मांग लेवे ॥ १३ ॥ अथवा राजाको वश करनेको मांग ले वा आयु, विद्या, यशकी वृद्धिके निमित्त मांग लेवे अथवा जो कुछ इच्छा होवे सो साधन करनेवाला मांग लेवे ॥ १४ ॥

चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दद्यान्न संशयः ॥
अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ॥१५॥
सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेद्व्रतम् ॥
नित्यं कुमारिका भोज्याः परमान्नेन वै त्रयः॥१६॥
सिद्धे धनाधिके नैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ॥
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा १७

अर्थ—यदि यक्षिणी प्रसन्न हो गई होगी तो मांगे हुए वरदान निःसंदेह देवेगी, आप करनेको अशक्त होवे तो ब्राह्मणोंसे कराय लेवे यह सुरपूजित प्रयोग है ॥ १५ ॥ अथवा ब्राह्मणोंको संग लेकर व्रतको साधन करे और नित्यप्रति उत्तम अन्नसे तीन कन्याओंको भोजन करावे

॥ १६ ॥ यक्षिणीदेवीके प्रसादसे सिद्ध किये हुए धनादिकों करके सदा उत्तम कर्म करे जो कदाचित् कुकर्ममें वह धन खर्च होगा तो सिद्धि जाती रहेगी यह सत्य है इसमें अन्यथा नहीं ॥ १७ ॥

अश्वत्थवृक्षमारुह्य जपेदेकाग्रमानसः ॥
धनदायीं यक्षिणीं च धनं प्राप्नोति मानवः ॥१८॥
मंत्रः । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ॥
अयुतं जपेत् सिद्धिर्भवति ॥

अर्थ—पीपलवृक्षपर बैठकर एक मन होकर धनदायी यक्षिणीके मंत्रका जप करनेसे मनुष्यको धन प्राप्त होवे ॥ १८ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इस मंत्रको दश हजार जपे तो सिद्धि होवे ॥

चूतवृक्षं समारुह्य जपेदेकाग्रमानसः ॥
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम् ॥
मंत्रः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु २ स्वाहा ॥
अयुतजपेन सिद्धिः ॥ १९ ॥

अर्थ—आंबके वृक्षपर चढकर सावधानमन होकर जप करे तो पुत्ररहित मनुष्यको पुत्र प्राप्त होवे यह शंकरजीका कहा भया असत्य नहीं करे, मूलमें लिखित मंत्र दश हजार जपे ॥ १९ ॥

वटवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥
महालक्ष्मी यक्षिणी च स्थिरा लक्ष्मीश्च जायते २०

मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॥
अयुतं जपेत्सिद्धिः ॥

अर्थ—वटवृक्षके ऊपर बैठकर सावधानमन होकर महालक्ष्मी नामा यक्षिणीके मंत्रका जप करना तो लक्ष्मी स्थिर होवे है, ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ यह मंत्र दश हजार जपना ॥ २० ॥

अर्कमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥
यक्षिणी च जयानामा सर्वकार्यकरी भवा ॥

मंत्रः । ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा । अयुतजपात्सिद्धिः ॥ २१ ॥

अर्थ–आकवृक्षकी जडपर बैठकर सावधान मन होकर जयानामा यक्षिणीका पूजन करे जो सब कार्यके सिद्धि करनेहारी है ॥ ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्रका दश हजार मंत्र जपे तो सिद्धि होवे ॥ २१ ॥

गुप्तेन विधिना कार्य्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ॥
प्रकाशे बहु विघ्नानि जायंते नात्र संशयः॥२२॥
प्रयोगश्चाऽनुभूतोयं तस्माद्यत्नवदाचरेत् ॥
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा ॥ २३॥
गोप्यं चेदं महत्तंत्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ॥
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः॥२४॥
इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे यक्षिणीसाधनं नाम
द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

अर्थ–यह प्रयोग गुप्तविधिसे करना, प्रकाश करके कदापि नहीं करना, प्रकाशित करनेसे निःसन्देह बहुत विघ्न उत्पन्न होते हैं ॥ २२ ॥ यह यक्षिणीप्रयोग अनुभव

किया भया है, इस कारण यत्नवान् होकर करे निर्विघ्न-तापूर्वक विधिसे करे तो उत्तम सिद्धि प्राप्त होवेगी ॥२३॥ यह महातंत्र गुप्त रखनेके योग्य है, हरएक किसीको नहीं देना कारण यह कि दुष्टके स्पर्श करनेसे विद्या अल्पफल-दायक हो जाती है ॥ २४ ॥

यह श्रीदत्तात्रेयतंत्रका बारहवां पटल समाप्त भया ॥१२॥

अथ त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

तत्र रसायनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि रसायनविधिं परम् ॥
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ॥ १ ॥
गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनःशिलाम् ॥
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेषयेत् ॥२॥

अर्थ—अब तेरहवें पटलमें रसायन प्रयोग लिखते हैं-श्रीशिवजी बोले कि हे दत्तात्रेयजी ! अब आगे रसायन-योग वर्णन करते हैं, कि जिसके सिद्धि होनेसे मनुष्य पृथिवीपर कुबेरके तुल्य होता है ॥१॥ गोमूत्र, हरताल,

गन्धक, मनशिल यह सब बराबर बराबर लेकर जबतक सूखे नहीं तबतक खरल करना ॥ २ ॥

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गंधकं रक्तवर्णकम् ॥
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचिः ॥३॥
गोलं कृत्वा द्वादशेह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ॥
चतुरंगुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—लाल रंगकी गौका मूत्र और लाल गंधक यह ग्यारह दिवसपर्यन्त रक्षापूर्वक पवित्र होकर खरल करना ॥ ३ ॥ अनन्तर बारहवें दिन गोला बनाकर लाल वस्त्रसे लपेटकर चार अंगुल मोटी चारों तरफ धूली (मिट्टी) लगायकर गोलेको सुखाय देना ॥ ४ ॥

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत् ॥
पलाशकाष्ठलोष्टैस्तु पूरयेद्द्रव्यमध्यगम् ॥ ५ ॥
अग्निं दद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥
ताम्रपत्रे सुसंतप्ते तद्भस्म तु प्रदापयेत् ॥ ६ ॥
गुंजैकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ॥

अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ॥ ७ ॥

अर्थ–पांच हात प्रमाणका एकगर्त (गढा) खोदे और ढाककी लकडीके कोयलेमें गोला बीचमें रखकर भर देवे ॥ ५ ॥ अनन्तर यत्नसे अग्नि जलावे जब वह प्रमाणभर तप्त होकर अग्नि शीतल हो जावे तब गोलेको बाहर निकालकर तांबेका पत्र अच्छे प्रकार तपाकर वह गोलेकी निकली भई भस्म पत्रपर डाले ॥ ६ ॥ एक गुंजा (घूंघची) प्रमाण तो उसी समयमें तांबेका पत्र सुवर्ण हो जावे यह रसायनप्रयोग निर्जनवनमें अथवा शिवालयके समीप करना ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षे सुचन्द्रेह्नि प्रयोगं साधयेत्सुधीः ॥
त्र्यम्बकेति च मंत्रस्य जपं दशसहस्रकम् ॥ ८ ॥
प्रत्यहं कारयेद्विप्रान् भोजयेद्रुद्रसंमितान् ॥
यावत्सिद्धिर्न जायेत तावदेतत्समाचरेत् ॥ ९ ॥

अथ द्रव्यमर्दनमंत्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय ॥

रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥
प्रतिदिने मर्दनसमये अयुतजपात्सिद्धिः ॥
इति दत्तात्रेयतंत्रे रसायनप्रयोगवर्णनो नाम त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

अर्थ—शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बली हो ऐसे दिन सुन्दर बुद्धिवान् जन इस रसायनप्रयोगको साधे और त्र्यम्बकं यजामहे० इत्यादि मंत्रका दश हजार जप करे ॥ ८ ॥ तथा प्रतिदिन ग्यारह ब्राह्मणोंको भोजन करावे और जब-तक सिद्धि नहीं होवे तबतक इसी प्रकार करे ॥ ९ ॥ अब मूलमें द्रव्य खरल करनेका मंत्र लिखा है ॥ खरल करने-के समयमें प्रतिदिन दश हजार मंत्र जपे तो सिद्धि होवे ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें रसायननामका तेरहवां पटल समाप्त भया ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

तत्र कालज्ञानम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कालज्ञानविनिर्णयम् ॥

यस्य विज्ञानमात्रेण कालज्ञानं विधीयते ॥ १ ॥
न दृष्टा नासिका येन नेत्रे च समलायतम् ॥
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर्नान्यथा शंकरोदितम्॥ २

अर्थ—अब चौदहवें पटलमें कालज्ञान लिखते हैं श्री-शिवजी कहते हैं कि हे दत्तात्रेय ! अब आगे कालज्ञान-का निर्णय वर्णन करता हूं जिसके जानने मात्रसे काल जाना जाता है ॥ १ ॥ जो मनुष्य अपनी नासिका नहीं दीखे और भौंह नहीं दीखे तो छः महनोंके अंतर मृत्यु पावे यह शिवजीका कहा अन्यथा नहीं है ॥ २ ॥

न दृष्टारुंधती येन सप्तर्षीणां च मध्यतः ॥
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर्यदि रक्षति चेश्वरः ॥ ३ ॥
स्नानकालस्य समये मृत्युज्ञानं निरीक्ष्यते ॥
हृदि शुष्कं भवेद्यस्य षण्मासाभ्यंतरे मृतिः॥४॥

अर्थ—जो मनुष्य सप्त ऋषियोंके मध्य अरुंधतीके ताराको नहीं दीखे तो यदि ईश्वरभी रक्षा करे तोभी छः महीनोंके अन्दर मृत्यु होवे ॥ ३ ॥ तथा स्नान करनेके

समय मृत्युज्ञानको देखे जो स्नान करने उपरान्त प्रथम हृदय सुख जावे तो छः महीनोंके बीच मृत्युको प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

रात्रौ चंद्रो दिवा सूर्यो मासमेकं निरन्तरम् ॥
भवेन्मृत्युश्च नुस्तस्य षण्मासाभ्यन्तरे ध्रुवम्५॥
सम्पूर्णं वहते सूर्यः सोमश्चैव न दृश्यते ॥
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञैः परिभाषितम्॥६॥

अर्थ–रात्रिको चंद्र (वाम) स्वर और दिनको सूर्य (दक्षिण) स्वर जिस मनुष्यका एक महीने पर्यन्त चले वह मनुष्य निश्चय छः महीनोंके अंदर मृत्युको प्राप्त होवे ॥ ५ ॥ तथा जो सर्वदा दहिनां स्वर चले और वायां स्वर नहीं चले तो १५ दिनमें मृत्यु होवे यह कालज्ञानियोंने कहा है ॥ ६ ॥

मासश्चैव तु षण्मासः पक्षश्चैव त्रिमासकः ॥
पंचरात्रिर्वहेच्चैकास्तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ ७॥
शुक्लपक्षे वहेद्वामं कृष्णपक्षे च दक्षिणम् ॥

उभयोस्त्रीणि दिवसं दृश्यते चंद्रसूर्य्ययोः॥ ७ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यका एकही स्वर एक मास छः मास वा एक पक्ष अथवा तीन महीने वा पांच रात्रितक वहे तो उस प्राणीकी मृत्यु निःसंदेह होवे ॥ ७ ॥ तथा शुक्ल पक्षमें वायां स्वर और कृष्णपक्षमें दहिना स्वर और दोनों पक्षोंमें चंद्र सूर्य दोनों स्वर तीन तीन दिन वहते हैं ॥ ८ ॥

पंचभूतात्मकं दीपं चंद्रस्नेहेन पूरितम् ॥
रक्षेच्च सूर्यवातेन तेन जीवः स्थिरो भवेत्॥ ९ ॥
आत्मा दीपः सूर्यज्योतिरायुः स्नेहकलात्मकः॥
काया कज्जलसंसारे वृत्तिरेषा तनोर्मता ॥१०॥

अर्थ–पंचाभूतात्मक यह देह दीपक है और चंद्रस्वरूप तैलसे भरा हुआ है इसकी सूर्यस्वरूप पवनसे रक्षा करे कि जिससे यह जीव स्थिर रहे ॥ ९ ॥ आत्मारूप दीप सूर्यरूप ज्योति और आयुरूपी तेल इसमें भरा भया है इसमें कायारूप कज्जल है और इस जगत्में जो प्राणी-की वृत्ति है सोही इस शरीरकी वृत्ति है ॥ १० ॥

च्छायां विधोर्न ध्रुवमृक्षमालामालोकयेद्यो न च मातृचक्रम् ॥ खण्डप्रदं यस्य च कर्दमादौ कफश्च्युतो मज्जति चाम्बुचुम्बी ॥ ११ ॥

अर्थ—जो मनुष्य चन्द्रछाया और ध्रुवनक्षत्र नक्षत्रमाला तथा मातृमण्डलको नहीं देखे तथा कीच आदिमें चरण रखनेसे खंडित दीख पडें और उसका कफ जलमें गिरनेसे नीचे जलके बैठ जाय तो उसको अरिष्ट जानना ११

उरः पुरः शुष्यति तस्य चार्द्रे न मान्ति तिस्रोंगुलयश्च वक्त्रे ॥ स्नातस्य मूर्धन्यपि धूमवल्ली निलीयते रिक्तमुखः खगो वा ॥ १२ ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके शरीरमें स्नानके उपरांत प्रथम छाती सुखे और तीन अंगुल जिसके मुखमें नहीं समावे तथा स्नानके उपरान्त जिसके मस्तकमें धुवांसा उठने लगे और फल तथा अन्नादिरहित चोंचवाला पक्षी मस्तकपर बैठ जावे तो उसको अरिष्ट जानना ॥ १२ ॥

अतीव तुच्छं बहु चाल्पहेतोरतीतसात्म्यः स-

दसत्प्रवृत्तौ ॥ अप्यंगुलिक्रान्तविलोचनान्तो
न मेचकं चान्द्रकमीक्षते यः ॥ १३ ॥

अर्थ—जो आरोग्य मनुष्य अकस्मात् थोडा भोजन करे वा बहुत भोजन करने लगे और जो उत्तम विषय तथा दुष्ट विषयोंमें आत्मभावको छोड दे अर्थात् उत्तम कर्म करनेवाला नीच कर्म करने लगे, नीच कर्मवाला अच्छा कर्म करने लगे तथा नेत्रोंको अंगुलियोंसे ढकनेसे मोर चंद्रिकासदृश तिलयुक्त अनुभवसिद्ध न देखे तो उसको अरिष्ट जानना ॥ १३ ॥

अक्षैर्लक्षितलक्षणेन पयसा पूर्णेन्दुना भानुना
पूर्वादक्षिणपश्चिमोत्तरादिशां षड्द्वित्रिमासैक-
कम् ॥ छिद्रं पश्यति चेत्तदा दशदिनं धूम्रा-
कृतिं पश्चिमे ज्वालां पश्यति सद्य एव मरणं
कालोचितज्ञानिनाम् ॥ १४ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे कालज्ञानकथनं नाम
चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

अर्थ—जो रोगी जलमें पूर्ण चन्द्रमा और सूर्यके प्रतिबिंबमें पूर्वकी वा दक्षिणकी अथवा पश्चिम वा उत्तरकी ओर छिद्र देखे तो वह क्रमसे ६ । ३ । २ । १ मास जीवे, तथा जो सूर्य चन्द्र धूम्र देखे तो दश दिन अथवा सूर्य चंद्रके प्रतिबिंबके पश्चिम ओर ज्वाला देखे तो तत्काल मृत्यु हो यह कालके जाननेवालोंने वर्णन किया है ॥ १४ ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रका चौदहवां पटल समाप्त भया ॥ १४ ॥

अथ पंचदशः पटलः ॥ १५ ॥

तत्र अनाहारः ॥ ईश्वर उवाच ॥

अंत्राणि कृकलासस्य करंजस्य च बीजकम् ॥
पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन तु वेष्टयेत् ॥ १ ॥
तां वक्त्रे धारयेद्योसौ क्षुत् पिपासा न बाध्यते ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २ ॥

अर्थ—अब पंद्रहवें पटलमें अनाहार प्रयोग लिखते

हैं श्रीशिवजी बोले हे दत्तात्रेयजी ! गिर्गिटकी आंतों, और कंजाके बीजोंको पीसकर गोली बनाय तावीजमें राखे ॥ १ ॥ उस तावीज (गुटिका) को मुखमें जो धारण करे, उसको भूख प्यास बाधा नहीं करे यह हर किसीको नहीं देना, शंकरजीका कहा भया असत्य नहीं है ॥ २ ॥

पद्मबीजं महाशालिं छागीदुग्धेन पेषयेत् ॥
साज्यं तत्पायसं कृत्वा भोजनं द्वादशं दिनम् ॥३॥
अपामार्गस्य बीजानि दुग्धाज्याभ्यां च पाचयेत् ॥
पायसो महिषीक्षीरैर्भुक्तो मासक्षुधापहः ॥ ४ ॥

अर्थ- कमलके बीज महीन चावल बकरीके दूधमें पकायकर घी मिलाय उस खीरको बारह दिनतक खावे ॥ ३ ॥ तथा ओंगाके बीज दूध घी मिलाय पचावे वह खीर भैंसके दुग्धकी हो, एक मासपर्यन्त वह खीर खावे तो क्षुधा दूर हो जावे ॥ ४ ॥

कोकिलाक्षस्य बीजानि विजयाबीजसंयुतम् ॥

तांबूलमूलसंयुक्तं तथा घृतविमिश्रितम् ॥ ५ ॥
छागीदुग्धेन संपेष्य वटिकां क्रियते नरः ॥
भक्षणं प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासा न बाध्यताम्॥६॥

अर्थ-तालमखानोंके बीज भांगके बीज तांबूल (पान) तथा घी मिलाय ॥ ५ ॥ बकरीके दुग्धमें पीस-कर मनुष्य गोली बना लेवे प्रातःसमय उठकर इन गोलि-योंका भक्षण करे तो भूख प्यास बाधा न करे ॥ ६ ॥

पद्मबीजं ह्यपामार्गतुलसीमूलसंयुतम् ॥
धात्रीबीजं तु संयुक्तं वटिकां क्रियते नरः ॥ ७ ॥
तस्य भक्षणमात्रेण तस्योपरि गवां पयः ॥
क्षुत्पिपासा हरेन्नित्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥८॥

अर्थ-कमलके बीज ओंगाके बीज तुलसीके जड आंवलेके बीज इनको मिलाय मनुष्य गोली बनावे ॥७॥ तिसके भक्षणमात्रसे और खानेके उपरांत गौका दूध पीनेसे नित्य भूख प्यास नाश हो जाय यह शंकरजीका कहा भया असत्य नहीं है ॥ ८ ॥

एरंडसरसैः पत्रैः पुष्पैश्चापि सुलक्षयेत् ॥
तस्मात्कन्दं समादाय ताम्बूले दृढमात्रतः ॥९॥
भक्षणं प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासाहरं परम् ॥
अनाहारप्रयोगोयं साक्षाच्छंकरभाषितः ॥ १० ॥
इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे अनाहारप्रयोगो नाम
पंचदशः पटलः ॥ १५ ॥

अर्थ—अंडेके कोमल पत्ते व फूलोंको देवे और जड लेकर पीसे फिर पानमें अच्छे प्रकार रखकर ॥९॥ प्रातः-समय उठकर भक्षण करे तो भूख प्यास दूर हो जावे यह अनाहारप्रयोग साक्षात् शिवजीने संभाषण किया है॥१०॥ यह दत्तात्रेयतंत्रका पंद्रहवां पटल समाप्त भया ॥ १५ ॥

अथ षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

तत्राहारम् ॥ ईश्वर उवाच ॥
बन्धूकस्य च वृक्षस्य पिष्ट्वा पुष्पफलैर्युतम् ॥
योसौ भुंक्ते घृतैः सार्द्धं भोजनं भीमसेनवत् ॥१॥
शनौ बिभीतवृक्षस्य संध्यायामभिमंत्रितम् ॥

प्रातः पत्राणि संगृह्य भोजनेंघ्रितले न्यसेत्॥२॥
आहारे सत्प्रयोगोयं भोजनं भीमसेनवत् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्धियोगमुदाहृतम् ॥३॥

अर्थ—अब सोलहवें आहारप्रयोग लिखते हैं श्रीशिवजी बोले दुपहरियाके वृक्षके फूल फलको पीसकर घीके साथ भक्षण करे तो भीमसेन समान भोजन करे ॥ १ ॥ तथा शनिवारके दिन बहेडेके वृक्षको संध्या समय जाकर निमंत्रण कर आवे और रविवारको प्रातःसमय जाकर उसके पत्तेको तोड लावे, फिर वह पत्ता भोजनके समय चरणतलके नीचे रखकर भोजन करे ॥ २ ॥ तो आहारमें यह उत्तम प्रयोग है भीमसेन समान भोजन करे हर किसीको यह सिद्धियोग नहीं देना ॥ ३ ॥

गृहीत्वा मंत्रितं मंत्री बिभीततरुपल्लवम् ॥
धारयेद्दक्षिणे हस्ते वसत्त्वाहारभुग्भवेत् ॥ ४ ॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ नमः सर्वभूताधिपतये हुं फट् स्वाहा ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे षोडशः पटलः समाप्तः ॥१६॥

अर्थ—मंत्र पढकर पवित्रतापूर्वक बहेडेके पत्ते तोड लावे और दहिने हाथमें बांधकर भोजन करे तो बहुत भोजन करेगा ॥ ४ ॥ मंत्र मूलमें लिखा है ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें सोलहवां पटल समाप्त भया ॥ १६ ॥

अथ सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥

तत्र निधिदर्शनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

शिरीषवृक्षपंचांगं कटुतैलेन पाचितम् ॥
विषं चैव समायुक्तं धत्तूरं बीजसंयुतम् ॥ १ ॥
पंचांगं करवीरं च श्वेतगुंजासमन्वितम् ॥
उल्लूविष्ठासमायुक्तं गन्धकं च मनःशिला ॥२॥
धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं निधिस्थाने विशेषतः ॥
पलायन्ते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः॥३॥
राक्षसैर्भूतवेतालैर्दैवदानवपन्नगैः ॥
सुखेनाशु निधिं प्राप्य परमानन्दभुग्भव ॥ ४ ॥

अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधिदर्शनं कुरु २ स्वाहा ॥

इति दत्तात्रेयतंत्रे निधिदर्शनं नाम सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥

अर्थ—अब सत्रहवें पटलमें निधिदर्शन कहते हैं श्रीशिवजी बोले कि सिरसके वृक्षका पंचांग, कडुवे तेलमें पचावे और विष तथा धतूरेके बीज उसमें मिलावे ॥ १ ॥ अनन्तर कनेरका पंचांग घूंघची सपेद मिलावे उल्लूकी विष्ठा मिलाय गन्धक और मैनशिल मिलावे ॥ २ ॥ इनकी धूप देकर मंत्र जपे जहांपर द्रव्यका स्थान होवे तो उस निधिको छोडकर जैसे कायर जन युद्धमें भागते हैं ॥ ३ ॥ वैसेही राक्षस, भूत, वेताल, देवता, दानव, पन्नग आदि सब उस निधिको त्याग देते हैं तो सुखपूर्वक उस निधिको पायकर परमानंदको प्राप्त होवो ॥ ४ ॥ मंत्र मूलमें लिखा है।

यह दत्तात्रेयतंत्रका सत्रहवां पटल समाप्त भया ॥ १७ ॥

अथाष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

तत्र वंध्यापुत्रवतीकरणम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

जन्मवंध्या काकवंध्या मृतवत्सा क्वचित्स्त्रियः ॥
तासां पुत्रोदयार्थं च शंभुना कथितं पुरा ॥ १॥
पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ॥
ऋत्वन्ते तानि पीतानि वंध्या पुत्रवती भवेत् २॥
एवं सप्तदिनं कुर्याच्छोकोद्वेगविवर्जितम् ॥
पतिसंगगता सा च नात्र कार्या विचारणा ॥ ३ ॥

अर्थ–अब अठारहवें पटलमें वंध्याको पुत्र होना लिखते हैं श्रीशिवजी बोले हे दत्तात्रेयजी ! वंध्या अनेक प्रकारकी होती हैं, जन्मवन्ध्या, काकवन्ध्या, मृतवत्सा इनमें कोई स्त्रियां जन्मवन्ध्या होती है जिनके कभी पुत्रोत्पन्न नहीं भया, कोई काकवंध्या अर्थात् एक बार होकर मर गया फिर नहीं भया, कोई मृतवत्सा अर्थात् संतान होकर मर जाती है इनके पुत्र होने व पुत्रसे सुख होनेके अर्थ श्रीशिवजीने प्रथम उपाय कहे हैं सो कहते हैं ॥ १ ॥ ढाकवृक्षके एक पत्तेको गर्भिणीके दूधमें पीसकर ऋतुके अंतमें वंध्यास्त्री पीवे तो गर्भवती होवे ॥ २ ॥ इस

प्रकार सात दिनपर्यन्त शोक और उद्विग्नतासे रहित होकर पतिके संगसे पुत्रवती होवे इसमें विचार नहीं करना ॥ ३ ॥

सम्मूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ॥
एकवर्णगवां क्षीरैः कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥ ४ ॥
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलार्धं तद्दिने दिने ॥
क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ॥ ५ ॥
एवं सप्तदिनं कृत्वा वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥

अर्थ—जड और पत्तोंसहित सर्पाक्षी वृक्षको रविवारके दिन लाकर उसको कुमारी (कन्या) के हाथसे एक रंगकी गायके दूधमें मर्दन करावे ॥ ४ ॥ सो ऋतुकालके अन्तमें प्रतिदिन वन्धा स्त्री आधे पलप्रमाण सेवन करे और दूध, पसाहीके चावलोंका अन्न, मूग आदि हलके पदार्थ आहारको देवे ॥ ५ ॥ इस प्रकार सात दिन करनेसे वन्ध्या पुत्रवती होती है ॥

उद्वेगं भयशोकं च व्यायामं च विसर्जयेत् ॥ ६ ॥
अनंगमुष्णशीतं च दिवानिद्रां विवर्जयेत् ॥

न कर्म कारयेत्किंचिद्वर्ज्जयेच्छीतमातपम् ॥ ७ ॥
न तया परमां सेवां कारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ॥
पतिसंगात् गर्भलाभो नात्र कार्या विचारणा ॥ ८ ॥

अर्थ—उद्वेग, भय, शोक, कसरत वर्जित करे ॥ ६ ॥ तथा पतिके साथ रमण, गर्मी, सरदी, दिनमें शयन करना और कोई परिश्रमका काम यह वर्जित करे तथा जिन कामोंसे सरदी गर्मी हो जाय सो त्याग करना ॥ ७ ॥ इस प्रकार पूर्वोक्त नियमसे रहकर पतिके संगमसे गर्भवती होवे इसमें विचार नहीं करना ॥ ८ ॥

एकमेव तु रुद्राक्षं सर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ॥
पूर्ववच्च गवां क्षीरैर्ऋतुकाले प्रदापयेत् ॥ ९ ॥
महागणेशमंत्रेण रक्षां तस्याश्च कारयेत् ॥ मंत्रः ॥
ॐ मदनमहागणपते रक्षामृतं मत्सुतं देहि ॥ १० ॥

अर्थ—एक रुद्राक्ष दो तोले सर्पाक्षी तथा एक रंगकी गायके दूधमें ऋतुसमय वंध्या स्त्रीको देवे तो उसके सेवनसे गर्भवती होवे ॥ ९ ॥ और गणेशमंत्रसे उसकी रक्षा करे ॥ ॐ मदन० इत्यादि मंत्र है ॥ १० ॥

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ॥
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ॥११॥
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा पिबेदेवं महौषधीम् ॥
सत्यं पुत्रवती वंध्या नान्यथा शंकरोदितम् १२॥

अर्थ—कदम्बके सपेद पत्ते, कटाईकी जड इनको समान भाग लेकर बकरीके दूधमें पीसे ॥ ११ ॥ और तीन दिन वा पांच दिन यह महाऔषधी पीवे तो सत्य वंध्या स्त्री पुत्रवती होवे यह शंकरजीकी वाणी अन्यथा नहीं है ॥ १२ ॥

कृष्णापराजितामूलमजाक्षीरेण संपिबेत् ॥
ऋतुस्नाता त्रिधा यातु वन्ध्या गर्भधरा भवेत् १३

अर्थ—काली विष्णुक्रांताकी जड बकरीके दूधमें पीसके ऋतुस्नाताको तीन दिन सेवन करनेसे वंध्या स्त्री गर्भवती होती है ॥ १३ ॥

तुरंगगन्धाघृतवारिसिद्धं साज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा ॥ प्राप्नोति गर्भं विषयं चरन्ती वन्ध्यापि

पुत्रं पुरुषप्रसंगात् ॥ १४ ॥ सपिप्पलीकेशरशृं-
गवेरं क्षुद्रायणं गव्यघृतेन पीतम्॥वन्ध्यापि पुत्रं
लभते हठेन योगोत्तमोयं हि शिवेन प्रोक्तः ॥ १५॥
इति दत्तात्रेयतंत्रे वन्ध्यापुत्रवतीकरणं
नामाष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

अर्थ—असगन्धको लेकर घी और जलमें सिद्ध करके ऋतुस्नानके दिन घी और दूधके साथ पीकर पतिके साथ मैथुन करनेसे वन्ध्या स्त्रीभी पुत्रगर्भको धारण करे। शयन-समय घृत पान करे ॥ १४ ॥ पीपल, नागकेशर, अदरख, छोटी गोल मिर्च इन सबोंको गायके घीमें पीसकर भक्षण करनेसे वन्ध्याकेभी पुत्र उत्पन्न होवे, यह उत्तम प्रयोग साक्षात् श्रीशिवजीने वर्णन किया है ॥ १५ ॥
यह दत्तात्रेयतंत्रमें अठारहवां पटल समाप्त भया ॥ १८ ॥

॥ अथैकोनविंशतितमः पटलः ॥ १९ ॥

तत्र मृतवत्सासुतजीवनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥
गर्भसंजातमात्रेण पक्षान्मासाच्च वत्सरात् ॥

म्रियते द्वित्रिवर्षाद्वा यस्याः सा मृतवत्सिका ॥१॥
गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ॥
गृहीत्वा लक्ष्मणामूलमेकवर्णगवां पयः ॥ २ ॥
पीत्वा सा लभते गर्भं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भावितम्॥३॥

अर्थ—अब उन्नीसवें पटलमें मृतवत्साके पुत्र जीनेका प्रयोग वर्णन करते हैं श्रीशिवजी बोले गर्भसे उत्पन्न मात्र हो और एक पक्ष वा एक मास वा एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्षका बालक होकर जिसके मर जाया करते हो वह मृत-वत्सा कहिये ॥ १ ॥ सुन्दर नक्षत्रमें ओंगाकी जडको और लक्ष्मणा (सपेद कटाई) की जडको लेके एक रंगकी गौके दूधके साथ ॥ २ ॥ पीवे तो मृतवत्सा स्त्री बहुत कालतक जीनेवाले पुत्रको प्राप्त होवे यह उत्तम प्रयोग हर किसीको नहीं देना शिवजीका कहा भया अन्यथा नहीं है ३

वंध्याककोंटिकाकंदं भृंगराजेन पेषयेत् ॥
ऋतुकाले त्र्यहं पीत्वा दीर्घजीविसुतं लभेत् ४॥

अर्थ–जो वन्ध्या स्त्री कूष्मांडीकी मूलको भांगराके रसमें घोटकर तीन दिन पीवे तो दीर्घजीवी पुत्र पावे ॥४॥

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा विमिश्रम् ॥ ऋतौ निपीय स्वपतिं प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ॥ ५ ॥

अर्थ–जो दाडिमके वृक्षकी जडको दूधके साथ सिद्ध करके उसमें घृत मिलाय ऋतुसमय पीकर अपने पतिसे प्रसंग करे सो स्त्री बहुत कालतक जीनेवाले पुत्रको जने ॥५॥

मार्गशीर्षेऽथवा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ॥
नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयेन कारयेत् ॥ ६ ॥
कदलीस्तंभसंयुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ॥
सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणमंडलस्थितम् ॥ ७ ॥
तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकान्ते नामविश्रुताम् ॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्यसंयुतैः ॥ ८ ॥
वाराही च तथा चैंद्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा ॥
कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु पत्रेषु मातरः ॥ ९ ॥

अर्थ—मार्ग अथवा ज्येष्ठमासमें पूर्णिमाके दिन घरको पवित्र कर लेपन करे और नवीन कलश रखकर सुगन्धित चंदन व जलसे पूर्ण करे ॥ ६ ॥ केलेके खंभोंसे युक्त वेदी हो, कलश नवरत्नसे युक्त हो तथा सुवर्णकी मुद्रिकासे युक्त छः कोणके मंडलमें स्थित हो ॥ ७ ॥ तिसके मध्य एकांतमें नाम लेकर देवियोंका पूजन करे, चन्दन फूल, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य करके पूजन करे ॥ ८ ॥ वाराही, ऐंद्री, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी ये छः दवी षट्कोणमें स्थित हैं, इनका नाम लेकर यथोपचारसे अर्चन करे ॥ ९ ॥

पूजयेन्मंत्रभावेन तथा सप्तदिनावधि ॥
अष्टमेह्नि सुतं चैकं कन्यानवकसंयुतम् ॥ १० ॥
भोजयेद्दक्षिणां दद्यात्पश्चात्कृत्वाभिवादनम् ॥
विसृज्य देवतां चाथ दद्यां तत्कलशादिकम् ॥ ११
प्रतिवर्षमिदं कुर्याद्दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥
सिद्धियोगमिदं ज्ञानं साक्षाच्छंकरभाषितम् ॥ १२

अथ मंत्रः ॥ ॐ परब्रह्मपरमात्मने अमुकीगृहे दीर्घजीविसुतं कुरु २ स्वाहा ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे मृतवत्सासुतजीवनं नामैकोनविंशः पटलः ॥ १९ ॥

अर्थ–मंत्रभावसे सात दिनपर्यन्त पूजन करे आठवें दिवस एक पुत्र और नव कन्याओंको ॥ १० ॥ भोजन कराय दक्षिणा देवे पीछे उनको प्रणाम करे, फिर देवताओंको तथा कलश आदिको नदीमें विसर्जन करे ॥ ११॥ प्रतिवर्ष यह उपाय करे तो बहुत कालतक जीनेवाला पुत्र उत्पन्न होवे तत्काल सिद्धिदायक यह प्रयोग साक्षात् श्रीशिवजीने वर्णन किया है ॥ १२॥ मंत्र मूलमें लिखा है॥ यह दत्तात्रेयतंत्रमें उन्नीसवां पटल समाप्त भया ॥ १९ ॥

अथ विंशतितमः पटलः ॥ २० ॥

तत्र काकवन्ध्याचिकित्सा ॥ ईश्वर उवाच ॥

पूर्वं पुत्रवती भूत्वा पश्चान्नो भूयते यदि ॥
काकवन्ध्या च सा ज्ञेया चिकित्साऽस्याश्च कथ्यते

अर्थ—अब वीसवें पटलमें काकवंध्याचिकित्सा लिखते हैं शिवजी बोले हे दत्तात्रेय ! प्रथम एकवार पुत्रवती होकर फिर दूसरी वार सन्तान नहीं होवे उसको काकवन्ध्या कहते हैं अब उसकी चिकित्सा वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

विष्णुक्रान्तां समूलां तु पिष्ट्वा दुग्धैस्तु माहिषैः ॥
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले च भक्षयेत् ॥ २ ॥
एवं सप्तदिनं कुर्यात् पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ॥
सा गर्भं लभते नारी काकवंध्या सुशोभनम् ॥३॥

अर्थ—विष्णुक्रान्ताको जडसहित लाकर भैंसके दूधमें पीस ऋतुकालमें भैंसके माखनके साथ सेवन करनेसे काकवन्ध्या स्त्री पुनः गर्भिणी होती है ॥ २ ॥ इस प्रकार सात दिनपर्यंत सेवन करे पूर्ववत् पथ्य जो कहा है वैसेही करे तो वह काकवन्ध्या फिर सुन्दर गर्भको धारण करे ३

अश्वगंधीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥
योजयेन्महिषीक्षीरैः पलार्धं भक्षयेत्सदा ॥ ४ ॥

सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या न संशयः ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम्॥ ५

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे काकवन्ध्याचिकित्सावर्णनं नाम विंशतितमः पटलः समाप्तः ॥ २० ॥

अर्थ–रविवार पुष्यनक्षत्रके दिन असगन्धकी जडको लाकर भैंसके दूधमें मर्दन करे फिर आधे पलप्रमाण नित्य सेवन करे ॥ ४ ॥ सात दिवस इसी प्रकार सेवन करनेसे काकवन्ध्या स्त्री निःसन्देह गर्भ धारण करे यह उत्तम प्रयोग हर किसीको नहीं देना शंकरजीका कहा भया अन्यथा नहीं है ॥ ५ ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें वीसवां पटल समाप्त भया ॥ २० ॥

अथैकविंशतितमः पटलः ॥ २१ ॥

तत्र जयोपायः ॥ ईश्वर उवाच ॥

मार्गशीर्षस्य पूर्णायां शिखीमूलं समुद्धरेत् ॥
बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयी भवेत् ॥ १॥
करे सुदर्शनं मूलं बध्वा रणकुले जयी ॥

आर्द्रायां वटवृन्दाकं हस्ते बध्वाऽपराजितः ॥ २॥
तद्वृक्षे चूतवृन्दाकं गृहीत्वा धारयेत्करे ॥
संग्रामे जयमाप्नोति जयां स्मृत्वा जयी तथा ॥ ३ ॥

अर्थ—अब इक्कीसवें पटलमें जयोपाय वर्णन करते हैं श्रीशिवजी बोले मार्गमासकी पूर्णिमाके दिन चीता वृक्षकी जडको लावे सो भुजा वा शिरपर धारण करे तो विवादमें जय होवे ॥ १ ॥ हाथमें सुदर्शन वृक्षकी जडको बांधनेसे रणमें विजयी होवे तथा आर्द्रानक्षत्रमें वटवृक्षका बांदा हाथमें बांधे तो जय होवे ॥ २ ॥ अथवा आमके वृक्षका बांदा लेकर हाथमें बांधनेसे संग्राममें विजय प्राप्त होवे है तथा विजयाका स्मरण करनेसेभी जय प्राप्त होवे है ॥३॥

कृत्तिका च विशाखा च भौमवारेण संयुता ॥
तद्दिने घटितं वस्त्रं संग्रामे जयदायकम् ॥ ४ ॥
गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुंजा च मूलकम् ॥
धारयेद्दक्षिणे हस्ते संग्रामे विजयी भवेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—कृत्तिका, विशाखा मंगलवारके दिन हो उस

दिन वस्त्र प्रस्तुत करके यह वस्त्र पहरकर युद्धमें गमन करनेसे निःसन्देह जय प्राप्त होवेगी ॥ ४ ॥ पुष्यनक्षत्रमें सपेद घूंघचीकी जडको लाकर दहिने हाथमें धारण करने व बांधनेसे संग्राममें जय प्राप्त होवे ॥ ५ ॥

धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम् ॥
हरतालसमायुक्तं तिलकं सुदिने कृतम् ॥ ६ ॥
अजाक्षीरेण संपेष्य रणराजकुले जयी ॥
विरोधे दूतकार्ये च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ७ ॥
इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे एकविंशः पटलः ॥ २१ ॥

अर्थ–धतूर, कनेर, ओंगा इनकी जड लाकर हरतालसहित शुभ दिन तिलक करे ॥ ६ ॥ तथा पूर्वोक्त औषध बकरीके दूधमें पीस तिलक करनेसे रणमें तथा राजसभामें जानेसे विजयी होवे, यह जयप्रयोग विरोधमें वा दूतकार्यमें करनेसे विजय प्राप्त होवे यह शंकरजीका कहा भया अन्यथा नहीं है ॥ ७ ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें इक्कीसवां पटल समाप्त भया ॥ २१ ॥

अथ द्वाविंशतितमः पटलः ॥ २२ ॥

तत्र वाजीकरणम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

वल्कलं चूतवृक्षस्य पात्रे मृण्मयानिक्षिपेत् ॥
तस्योपरि जलं क्षिप्तं ततो वस्त्रेण रक्षयेत् ॥ १ ॥
प्रातर्दुग्धेन सहितं यः पिबेन्मकरध्वजः ॥
धातुवृद्धिकरं लोके बलपुष्टिकरं तथा ॥ २ ॥
कुमारीकंदमादाय गोक्षीरेण च यः पिबेत् ॥
बलपुष्टिकरं धातुर्जायते नात्र संशयः ॥ ३ ॥

अर्थ—अब बाईसवें पटलमें वाजीकरणप्रयोग लिखते हैं—श्रीशिवजी बोले आंबके वृक्षके वक्कलको लेके मिट्टीके पात्रमें रक्खे उसमें जल छोडकर कपडेसे ढक देवे ॥ १ ॥ फिर प्रातःसमय गौके दुग्धके साथ जो कामी जन पीवे तो धातुकी वृद्धि होवे, तथा शरीर बली व पुष्ट हो जावे ॥ २ ॥ घीग्वारकी मूलको लेके गौके दुग्धके साथ जो मनुष्य पीवे सो मनुष्य निःसन्देह बली पुष्ट हो व धातुकी वृद्धि करे ॥ ३ ॥

गृहीत्वा च रवौ वारे भिंडिकासु च पूर्ववत् ॥
छायाशुष्कं च तच्चूर्णं अश्वगन्धसमन्वितम् ॥४॥
मुशली गोक्षुरं चैव विजयाबीजसंयुतम् ॥
एकवर्णगवां क्षीरे यः पिबेट्टंकमात्रकम् ॥ ५ ॥
बलपुष्टिकरं देहे स्तंभनं धातुवृद्धिकृत् ॥
सिद्धियोगमिदं तत्र कामदेवो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

अर्थ—रविवारके दिन भिंडीफलको पूर्ववत् लाकर छायामें सुखाय उसका चूर्ण करे और असगन्ध मिलाय लेवे ॥ ४ ॥ अनन्तर मुशली, गोखरू और, भांगके बीज मिलाय चूर्ण कर लेवे, फिर जो मनुष्य एक रंगकी गौके दूधमें एक टंक (४ मासे) पीवे ॥ ५ ॥ बल और पुष्टिको देहमें करे तथा धातुस्तंभन हो, धातुवृद्धि हो यह प्रयोग सिद्धिदायक है, इससे कामदेवसमान मनुष्य हो जावे ॥६॥

अश्वत्थफलं संग्राह्य छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥
पिबेत्सत्यं दुग्धसार्द्धं जायते मकरध्वजः ॥ ७ ॥
गृहीत्वा ह्यमृतामूलं रविवारेऽभिमंत्रितम् ॥

तस्य सत्वं शुष्कच्छाया शर्कराभक्षणाद्बली ८॥
महासौख्यकरं पुंसां तस्योपरि गवां पयः ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ९॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे द्वाविंशतितमःपटलः ॥ २२ ॥

अर्थ—पीपलके फलको लेके छायामें सुखावे और दुग्धके साथ पीवे तो कामदेवसमान बलवान् होवे ॥ ७ ॥ तथा गिलोयकी जडको रविवारको अभिमंत्रित करके लावे, फिर उसके सत्वको लेके छायामें सुखावे और शक्करके साथ सेवन करे तो बलवान् होवे ॥ ८ ॥ उसके ऊपरसे गौका दूध पीवे, यह प्रयोग महासुखको करनेवाला है, हर किसीको यह नहीं देना श्रीशंकरजीका कहा भया अन्यथा नहीं है, ॐ नमो भगवते अमुकं बलपराक्रमं कुरु कुरु स्वाहा—यह मंत्र है ॥ ९ ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रमें बाईसवां पटल समाप्त भया ॥ २२ ॥

अथ त्रयोविंशतितमः पटलः ॥ २३ ॥

तत्र द्रावणादिकथनम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

सिता चौशीरतगरं कुसुंभं क्षौद्रलेपनम् ॥
द्रावणं कुरुते स्त्रीणां विना मंत्रेण सिद्ध्यति ॥ १ ॥
बृहतीफलमूलानि पिप्पलीमारिचानि च ॥
मधुना रोचना सार्द्धं लिंगलेपो द्रवः स्त्रियाः ॥२॥
क्षौद्रं गंधकलेपेन शिलायत्नेन लेपयेत् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम्॥३॥

अर्थ–अब तेईसवें पटलमें द्रावणादिप्रयोग लिखते हैं श्रीशिवजी कहते हैं, हे दत्तात्रेयजी ! शक्कर, खस, तगर, कुसुंभ, शहत इनका लेप बनाय लिंगपर करके स्त्रीसंभोग करे तो स्त्री शीघ्र स्खलित हो जावे यह विना मंत्रके सिद्ध होता है ॥ १ ॥ कटाईका फल और जड, पीपरी, मिरच, शहत, गोरोचन इनका लेप बनाय लिंगपर लेप करे संभोग करनेसे स्त्री स्खलित होवे ॥ २ ॥ शहत, गन्धक, इनको शिलापर घिसपर लेप करे तो स्त्री स्खलित होवे यह प्रयोग हर किसीको नहीं देना श्रीशिवजीका कहा भया यह अन्यथा नहीं है ॥ ३ ॥

अथ वीर्यस्तम्भनम् ।

कर्पूरटंकणं सूततुल्यं मुनिरसं मधु ॥
मर्दयित्वा लिपेल्लिंगं स्थित्वा यामं तथैव च॥ ४ ॥
ततः प्रक्षालयेल्लिंगं रमेद्रामां यथोचिताम् ॥
वीर्यस्तंभकरं पुंसां सम्यङ्नागार्जुनोदितम् ॥ ५ ॥

अर्थ—अब वीर्यस्तम्भनप्रकार वर्णन करते हैं कपूर, सुहागा, पारा, अगस्तके पुष्पका रस, सहत यह समान भाग लेकर मर्दन करे अनन्तर लिंगपर लेप करे एक प्रहरतक राखे ॥ ४ ॥ फिर लिंगको धोकरके यथोचित समयपर स्त्रीको रमण करे तो अच्छे प्रकार वीर्यका स्तम्भन होवे यह नागार्जुनका कहा भया प्रयोग है ॥ ५ ॥

मधुना पद्मबीजानि पिष्ट्वा नाभिं प्रलेपयेत् ॥
यावत्तिष्ठत्यसौ लेपस्तावद्वीर्य्यं न मुंचति ॥ ६ ॥
सूकरस्य तु दंष्ट्राग्रं दक्षिणं च समाहरेत् ॥
कट्योपरि पटे बद्ध्वा शुक्रस्तम्भः प्रजायते ॥ ७ ॥
तुलसीबीजचूर्णं तु तांबूलैः सह भक्षयेत् ॥

न मुंचति नरो वीर्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ८॥

अर्थ—कमलगट्टोंको सहतके साथ पीसकर नाभिपर लेप करे तो जबतक वह लेप रहेगा तबतक वीर्य स्खलित नहीं होगा ॥ ६ ॥ शूकरकी दहिनी ढाडके अग्रभागको ले आवे फिर उसको लेके कमरमें वस्त्रपर बांधकर स्त्री सम्भोग करे तो वीर्य स्खलित नहीं होवे अर्थात् वीर्यस्तम्भ होवे ॥ ७ ॥ तथा तुलसीके बीजका चूर्ण तांबूलके साथ भक्षण करे तो मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होवे यह शंकरजीका कहा भया अन्यथा नहीं है ॥ ८ ॥

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत् ॥
कटुत्रयैर्गवां क्षीरैः सम्पिष्य गोलकीकृतम् ॥ ९ ॥
छायाशुष्कं स्थितं चास्ये वीर्य्यस्तम्भकरं परम् ॥
नीलीमूलं स्मशानस्थं कट्यां बद्ध्वा तु वीर्य्यधृक् १०

अर्थ—इन्द्रायनकी जड पुष्यनक्षत्रमें नग्न होकर उखाड लावे और त्रिकुट (सोंठ, मिरच, पीपर) सहित गायके घीमें पीसकर गोली बना लेवे ॥ ९ ॥ फिर यह गोली

छायामें सुखाय मुखमें रखनेसे वीर्यस्तम्भन होता है, अर्थात् यह गोली वीर्यको रोकनेवाली है, तथा स्मशानमें स्थित नीलीवृक्षकी जडको लाकर कमरमें बांधे तो वीर्यको धारण करे ॥ १० ॥

रक्तापामार्गमूलं तु सोमवारे निमंत्रयेत् ॥
भौमे प्रातः समुद्धृत्य कट्यां बद्ध्वा तु वीर्यधृक्॥११
तिलगोक्षुरयोश्चूर्णं छागीदुग्धेन पाचितम् ॥
शीतलं मधुना युक्तं खंडं खादेद्द्रवः स्त्रियाः ॥ १२॥

अर्थ-सोमवारके दिन संध्यासमय लाल चिरमिटेकी जडको निमंत्रित करके मंगलवारको प्रातःसमय उसको उखाड लावे फिर उसे कमरमें बांधनेसे वीर्यस्तम्भन होवे ॥ ११ ॥ तथा तिल, गोखरूका चूर्ण जो बकरीके दूधमें पचाय शीतल करके सहतके साथ खावे तो स्त्री स्खलित होवे और पुरुषका वीर्य स्खलित नहीं होवे ॥ १२ ॥

प्रक्षाल्यमंभसा नित्यं कृत्वामलकवल्कलैः ॥
वृद्धापि कामिनी कामं बालावत्कुरुते रतिम् १३ ॥

अर्थ–प्रतिदिन आंवलेके वक्कलसे जल मिलाय भगको प्रक्षालन करे तो वृद्धा स्त्रीभी बाला (नवयौवना) के समान रतिकेलिको करे ॥ १३ ॥

चटकांडं तु संग्राह्य नवनीतेन पेषयेत् ॥
तेन प्रलेपयेत्पादौ शुक्रस्तम्भः प्रजायते ॥ १४ ॥
यावन्न स्पृशते भूमिं तावद्वीर्यं न मुंचति ॥
डुंडुभो नामतः सर्पः कृष्णवर्णस्तमाहरेत् ॥ १५ ॥
तस्यास्थि धारयेत्कटयां नरो वीर्यं न मुंचति ॥
विमुंचति विमुक्तेन सिद्धियोग उदाहृतः ॥ १६ ॥

अर्थ–गगैयापक्षीके अंडेको लेके मक्खनमें पीस लेवे तिसका लेप चरणोंके तलोंपर करे तो वीर्य्यस्तम्भन होवे है ॥ १४ ॥ जबतक पृथिवी स्पर्श न करे तबतक वीर्य स्खलित नहीं होवे तथा डुंडुभ नामसे जो काले रंगका सांप उसके हाडको लेके ॥ १५ ॥ कमरपर बांधे और रति करे तो मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होवे

उसके खोलनेसे स्खलित होवे यह सिद्ध किया भया प्रयोग है ॥ १६ ॥

खसपलशुंठीक्काथः षोडशशेषेणगुडेननिशिपीतः॥ कुरुते रतौ न पीतो रेतःपतनं विनाम्लेन ॥ १७ ॥

अर्थ—खस १ पल सोंठके काढेमें सोलहवां भाग गुड मिलाय रात्रिसमय पीके रति करे तो मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होवे खटाई खावे तब स्खलित होवे ॥ १७ ॥

अथ केशरंजनम् ।

काश्मर्या मूलमादौ सहचरकुसुमं केतकीनां च मूलं लोहं चूर्णं सभृंगं त्रिफलजलयुतं तैलमेभिर्विपक्कम् ॥ कृत्वा वै लोहभांडे क्षितितलनिहितं मासमेकं निधाय केशाः काशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा लेपनादेव कृष्णाः ॥ १८ ॥

अर्थ—कुम्हेरनकी जड, पियावासाके फूल, केतकीकी जड, लोहचूर्ण, भांगरा, त्रिफलाका जल, तेल इन सबोंको लेके लोहेके पात्रमें भरकर पकाय लेवे फिर पृथिवीमें एक

महीनेतक गाड देवे उपरान्त निकालकर केशोंपर लेप करे तो भौंराओंके समान काले और लंबे केश हो जावें ॥१८॥

त्रिफलालोहचूर्णं तु वारिणा पेषयेत्समम् ॥
द्वयोस्तुल्येन तैलेन पचेन्मृद्वग्निना क्षणम् ॥१९॥
तैलतुल्ये भृंगरसे तत्तैलं तु विपाचयेत् ॥
स्निग्धभांडगतं भूमौ स्थितं मासात्समुद्धरेत् २०॥
सप्ताहं लेपयेद्धृष्ट्वा कदल्याश्च दलैः शिरः ॥
निर्वाते क्षीरभोजी स्यात्क्षालयेत्त्रिफलाजलैः २१
नित्यमेवं प्रकर्तव्यं सप्ताहं रंजनं भवेत् ॥
यावज्जीवं न सन्देहः कचाः स्युर्भ्रमरोपमाः ॥२२॥

अर्थ–त्रिफला (आवला, हर्ड, बहेडा), लोहचूर्ण इनको बराबर लेके जलमें पीस लेवे फिर दोनोंके बराबर तेल डालकर थोडी देर धीमी आंचसे पकावे ॥ १९ ॥ फिर तेलके बराबर भांगराका रस उस तेलमें पचावे अनन्तर उस तेलको चिकनी हांडीमें भरकर पृथिवीमें

गाड देवे एक महीना उपरांत निकाले ॥ २० ॥ इस तेलको शिरमें सात दिन लेप करे लेप करके केलोंके पत्ता लपेट देवे वायु न लगने पावे त्रिफलाके जलसे धोवे दुग्धभोजन करे ॥ २१ ॥ इस प्रकार सात दिन करे तो केशरंजन होवे जबतक जीवे तबतक केश भौंराके समान काले होवें ॥ २२ ॥

त्रिफलालोहचूर्णं च इक्षुभृंगरसस्तथा ॥
कृष्णमृत्तिकया सार्धं भाण्डे मासं निरोधयेत् २३
तल्लेपाद्रंजते केशान् चतुर्मासं स्थिरो भवेत् ॥
लौहकिट्टं जपापुष्पं पिष्ट्वा धात्रीफलं समम् ॥
त्रिदिनं लेपयेच्छीघ्रं त्रिमासं केशरंजनम् ॥२४॥

अर्थ– त्रिफला, लोहचूर्ण, ईख और भांगराके रस ये सब बराबर भाग लेकर सब द्रव्योंमें आधी काली मिट्टी एकत्र कर एक पात्रमें एक महीनेतक स्थापना करे ॥ २३ ॥ अनन्तर उसका केशोंपर लेप करनेसे चार महीनोंतक बाल काले रहें। लोहेकी कीटी, गुड़हलका फूल

आंवले वह समान भाग लेकर मर्दन करे फिर तीन दिन केशोंपर लेप करनेसे तीन महीनोंतक बाल काले रहते हैं २४

हरितालचूर्णकलिकालेपात्तेनैव वारिणा सद्यः ॥ निपतन्ति केशनिचयाः कौतुकमिदमद्भुतं कुरुते ॥२५॥ रम्भाजलैः सप्तदिनं विभाव्य भस्मानि कम्बोर्मसृणानि पश्चात् ॥ तालेन युक्तानि विलेपनानि लोमानि निर्मूलयति क्षणेन ॥२६॥

अर्थ—हरताल, चूनेको लेके चूनेहीके पानीसे पीसकर लगानेसे बहुत शीघ्र केश गिर पडते हैं यह अद्भुत कौतुक करे ॥ २५ ॥ शंखकी भस्मको केलेके रसमें एक सप्ताह भावना देकर इसमें हरताल मिलावे फिर अच्छे प्रकार मर्दनपूर्वक लोमयुक्त स्थलमें लेप करनेसे लोम गिर जाते हैं ॥ २६ ॥

पलाशचिंचातिलमाषशंखं दहेदपामार्गसपिप्पलोपि॥ मनःशिलातालकचूर्णलेपात्करोति निर्लोम शिरः क्षणेन ॥ २७ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे त्रयोविंशतितमः पटलः॥२३॥

अर्थ—ढाक, इमली, तिल, उडद, शंख, ओंगा, पीपरी, मनशील, हरताल, चूना इन सबोंका लेपन करनेसे क्षणमात्रमें शिरके केश गिर जाते हैं ॥ २७ ॥

यह दत्तात्रेयतंत्रका तेईसवां पटल समाप्त भया ॥ २३ ॥

अथ चतुर्विंशतितमः पटलः ॥ २४ ॥

तत्र भूतग्रहादिनिवारणम् ॥ ईश्वर उवाच ॥

शिरीषनिम्बयोः पत्रं गोशृंगस्य त्वचा वचा ॥
वंशत्वक् शिखिपुच्छं च कंगुना च घृतं समम्॥१
धूपो बालग्रहान् हन्ति एतन्मंत्रेण मंत्रितः ॥ मंत्रः
ॐ द्रुतं मुञ्च ठड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा॥२

अर्थ—अब चौवीसवें पटलमें भूतग्रहादिनिवारण वर्णन करते हैं श्रीशिवजी बोले हे दत्तात्रेय! सिरस, नींबके पत्ते, बबूरकी छाल, वच, वांसकी छाल, मोरकी पूंछ, कांगनी धान और घी इन सबोंको समान भाग लेवे ॥ १ ॥ फिर

धूप देवे उक्त मंत्रद्वारा धूप देनेसे बालकका ग्रहदोष निवा-रण होवे है ॥ २ ॥

बिल्वमूलं देवदारु गोशृंगं च प्रियंगु च ॥
पिष्ट्वा धूपो निहन्त्याशु ग्रहभूतज्वरादयः ॥ ३ ॥
शाकिनी राक्षसाः प्रेताः पिशाचा ब्रह्मराक्षसाः ॥
ऐकाहिको द्व्याहिकश्च ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् ॥ ४

अर्थ—बेलकी जड, देवदारु, बबूर, फूल प्रियंगु इनको पीसकर धूप देवे तो शीघ्र ग्रह भूत और ज्वरादि नष्ट होते हैं ॥ ३ ॥ शाकिनी, ब्रह्मराक्षस, प्रेत, पिशाच, राक्षस, तथा ऐकाहिक द्व्याहिक ज्वरभी नष्ट हो जाता है ॥ ४ ॥

श्रीवासं सैन्धवं कुष्ठं वचा तैलं घृतं वसा ॥
धूपो बालग्रहे देयो ग्रहराक्षसशान्तये ॥ ५ ॥
पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतैर्विरचितो धूपः ॥
गर्भिण्यां बालानां सततं रक्षाकरः कथितः ॥ ६ ॥

अर्थ—चन्दन, सेंधा, कूठ, वच, तेल, घी, चर्बी इन सबोंकी धूप बनाय बालकके घरमें देनेसे ग्रह और राक्षसोंकी

शान्ति होवे है ॥ ५ ॥ तथा सोंठ, नींबके पत्ते, सर-सों, घी इन द्रव्योंसे बनी धूप गर्भिणी और बालकोंके देने-से निरन्तर रक्षा करे है ऐसा कहा है ॥ ६ ॥

दाडिमस्य च वन्दाकं ज्येष्ठाऋक्षे समुद्धरेत् ॥
द्वारबन्धे च बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ॥ ७ ॥
पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ॥
बालानां कंठदेशे तु डाकिनीभयनाशनम्॥ ८ ॥

अर्थ—दाडिम (अनारवृक्ष) का बांदा ज्येष्ठानक्षत्रमें ला-कर बालकके गृहद्वारपर बांधे तो बालकका सब प्रकारसे ग्रहदोष शान्त हो जाता है ॥ ७ ॥ तथा पुष्यनक्षत्र रवि-वारके दिन सपेद घूंघचीकी जड उखाड लावे सो बालकके कण्ठमें बांधे तो डाकिनीका भय नाश हो जावे ॥ ८ ॥

श्वेतापराजितापत्रं जयापत्रं द्वयो रसम् ॥
नस्यं कुर्यात्पलायंते डाकिनीदानवादयः ॥ ९ ॥
नरसिंहस्य बीजं तु सकृदुच्चरितं हरेत् ॥

डाकिनीप्रेतभूतानि तमः सूर्योदये यथा ॥ १० ॥

अर्थ–सपेद छोकरके पत्ते और जयन्तिके पत्ते इनका रस निकाल ले फिर बालकको उसका नास देनेसे डाकिनी शाकिनी आदि दूर भाग जाते हैं ॥ ९ ॥ नरसिंहजीका मंत्र पढकर बालक वा सूतिकाको झाड देनेसे जैसे सूर्यके उदय होने से अंधकार नाश हो जाता है, तैसे सूतिका और बालकके शरीरसे डाकिनी, प्रेत, भूतादि दूर भाग जाते हैं ॥ १० ॥

नरसिंहमंत्रः ॥ ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विसर विसर पच पंच हन हन कम्पय कम्पय मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एह्येहि रुद्रा आज्ञापयति स्वाहा ॥

यह नरसिंहमंत्र है ॥

अथ सिंहव्याघ्रादिभयनाशनम् ।

पुष्यार्के संगृहीत्वा तु श्वेतार्कस्य च मूलकम् ॥
धारयेद्दक्षिणे हस्ते सिंहबाधाभयं न हि ॥ ११ ॥
गृहीत्वा शुभनक्षत्रे धत्तूरमूलकं तथा ॥
धारयेद्दक्षिणे हस्ते व्याघ्रबाधाभयं नहि ॥ १२ ॥

अर्थ–अब सिंहव्याघ्रादिभयनिवारण लिखते हैं. पुष्य नक्षत्र रविवारके दिन सफेद आककी जडको लेके दहिने हाथमें अभिमंत्रित करके बांधे तो सिंहकी बाधा नहीं होवे ॥ ११ ॥ तथा सुंदर नक्षत्रमें धतूरेकी जडको लेके दहिने हाथमें बांधे तो व्याघ्रकी बाधा नहीं होवे ॥ १२ ॥

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अमृतामूलकं पुनः ॥
तन्मालां धारयेत्कण्ठे सर्पबाधाभयं नहि ॥ १३ ॥
गृहीत्वा रविवारे च श्वेतकरवीरमूलकम् ॥
धारयेद्दक्षिणे हस्ते अग्निबाधाभयं नहि ॥ १४ ॥
मंत्रः ॥ ॐ नमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः ॥

अनेन मंत्रेण सप्तांजलिजलं अग्निमध्ये निक्षिपेत् तदाग्निशांतिर्भवति ॥

इति श्रीदत्तात्रेयईश्वरसंवादे दत्तात्रेयतंत्रे चतुर्विंशतितमः पटलः समाप्तः ॥ २४ ॥

अर्थ—पुष्यनक्षत्रमें गिलोयकी जडको लेके उसकी माला कण्ठमें धारण करे तो सर्वबाधा नहीं होवे ॥ १३ ॥ तथा रविवारके दिन सपेद कनेरकी जडको लेके दहिने हाथमें धारण करे तो अग्निकी बाधा नहीं होवे ॥ १४ ॥ मंत्र मूलमें लिखा है, अग्निशांति करनेके निमित्त मंत्र पढकर सात अंजली जल अग्निमें छोड देवे तो अग्नि शांत होवे ॥

इति दत्तात्रेयतंत्रका चौवीसवां पटल समाप्त भया॥ २४ ॥

वेदबाणनिधीन्द्वब्दे भाद्रे मासि सिते दले ॥
तृतीयायां चंद्रवारे भाषा सम्पूर्णतामगात् ॥ १ ॥
भाषेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्म्मणा ॥
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं विबुधैर्नरैः ॥ २ ॥

अर्थ–श्रीमन्महाराज विक्रमादित्यजीके संवत् १९५४ भाद्रशुक्लतृतीया चन्द्रवारके दिन यह भाषा सम्पूर्ण भई ॥ १ ॥ यह दत्तात्रेयतंत्रकी भाषा श्रीपंडित नारायणप्रसादशर्म्मा करके प्रेमपूर्वक करी गई, इसमें जो कहीं कुछ अशुद्धता रह गई हो सो पंडितजनोंकरके क्षमा करनी योग्य है ॥ २ ॥

तथाच–अस्मिन् स्वरव्यंजनबिंदुरेफमात्राविहीनं लिखितं मया यत् ॥ तत्सर्वमार्यैः परिशोधनीयं प्रायेण मुह्यंति हि ये लिखंति॥३ग्रन्थे इति शेषः।

अर्थ–इस ग्रन्थमें स्वर, व्यंजन, बिन्दु, रेफ वा मात्राको भूलकर हमने न लिखा हो, उसको पंडित लोगोंकरके शोध लेना चाहिये क्योंकि बहुधा करके जो लिखते हैं वे छोड देते हैं अर्थात् छूटही जाता है, यह सबसे हमारी प्रार्थना है ॥ ३ ॥

लक्ष्मीपुरे बरेल्यां च नारायणमुकुन्दयोः ॥
ताभ्यां सुतंत्रग्रन्थोयं गंगाविष्णोः समर्पितः॥ ४ ॥

अर्थ–लखीमपुर और बरेलीमें संस्कृतपुस्तकालयके स्वामी पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दरामजी तिन दोनोंने यह दत्तात्रेयतंत्र भाषाटीकासहित सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-जीके अर्थ समर्पण करा ॥ ४ ॥

॥ इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

नृसिंहआख्यान।

बाबा लक्ष्मणदासजीने इस ग्रन्थमें अनेक कथाओंका समावेश करके यह संग्रह किया है, आप जानते हैं " मीठा भावत् लौन पर मीठेहू पर लौन " सो आपने शृंगाररसके अनेक ग्रन्थ देखेही होंगे परन्तु अब यह भक्तकथा पढकर भी चित्त बहलाइये इस ग्रन्थकी कविता जैसी कुछ बनी है वह तो आपके सन्मुख उपस्थितही है परन्तु कथामात्रका स्मरण करनेसे चित्त एकाएक भक्तिके अगाध सागरमें गोते लगाने लगता है आशा है सच्चे भक्त उस दशाका अवश्य अनुभव करेंगे । कीमत १ रुपया.

तुलसीदास जीवनचरित्र–इसमें तुलसीकृत रा-मायणका माहात्म्य तथा तुलसीदासजीका जीव-नचरित्र है. शेषमें तुलसीदासजीकृत सुप्रसिद्ध बरवै रामायणभी है. दाम चार आने.

अनुरागप्रकाश.

इस किताबमें कितनी बातें अच्छीसे अच्छी अपूर्व जिससे मनुष्यताके जन्म लेनेका उद्धार होसक्ता है. और सूरदास, तुलसीदास आदि बहुतसे कवियोंका मतमतांतर है. एकबार अवश्य पढिये. की० फक्त १० आना.

जाहिरात.

	रु० आ०
मयूरचित्रक भा. टी....	०—६
गोविंदगुणवृन्दाकर.	१—०
विवेकचिंतामणि	०—१
वैद्यावतंस भाषाटीका.	०—३
चौतालचंद्रिका	०—४
स्त्रीपुरुषसंजीवन भा० टी०	०—८
मित्रलाभ दोहा चौपाईमें	०—४
अहिरावणलीला	०—४
हारीतसंहिता भाषाटीका.	३—०
हरिवंश भाषाटीका. रफ् ९ रु० .... ग्लेज	१०—०
भक्तिविलास....	०—२
घेरंडसंहिता (योगशास्त्र) भा० टी०	०—१०
भैरवसहस्रनाम	०—२
मैत्रीधर्मप्रकाश भा०टी०	०—४
हरिवंश केवल भाषा ग्लेज ५ रु० .... रफ्	४—०
ग्रहगोचर ज्योतिष भाषाटीका	०—२
दत्तकारुण्यलहरी भाषाटीका....	०—३

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, कल्याण—मुंबई.